www.thearyasamaj.org

ओ३म्

# आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 10 नवम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 10 नवम्बर, 2013 से 16 नवम्बर 2013

कार्तिक शु. –08 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 81, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

## डी.ए.वी. पुष्पांजलि, दिल्ली में मनाया गया महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्मदिवस

आर्य युवा समाज के तत्त्वावधान में डी.ए.वी. स्कूल पुष्पांजलि के प्रांगण में पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के जन्मोत्सव पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ उपरांत प्रधानाचार्या श्रीमती रशिम राज बिस्वाल जी ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''यज्ञ जहाँ हमारे वातावरण और विचारों को परिमार्जित करता है वहीं महापुरुषों का जीवन दर्शन, हमें सदैव प्रेरित करता रहता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के माध्यम से इस युग में भी वैदिक चिन्तन शैली को आत्मसात करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।''

प्रधानाचार्या श्रीमती विस्वाल जी ने महात्मा आनन्द स्वामी जी के गायत्री प्रेम, और गायत्री जप की बात की और प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में गायत्री मन्त्र का सदैव क्रम से जप करना चाहिए, क्योंकि यह मन्त्र हमारी दिव्यता को उद्घाटित करता है। और महात्मा आनन्द स्वामी जी का सच्चा स्मरण हमारे लिए यही होगा कि हम गायत्री मन्त्र का कम से कम पांच जप प्रतिदिन अवश्य करें। ऐसा आज हम सब उनके जन्मदिवस पर संकल्प करें।

प्रधानाचार्या जी ने कहा कि महापुरुषों के जन्मदिवस मनाने का उद्देश्य है कि हम उनके जीवन दर्शन का स्मरण करें और उनसे प्रेरित होकर उन्नति की ओर पग बढाए।

## डी.ए.वी. नारायणगढ़ में हुआ 21 कुण्डीय यज्ञ

डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल नारायणगढ़ में विद्यालय की खुशहाली व पर्यावरण संरक्षण के लिए 21 कुण्डीय यज्ञ किया गया। इस यज्ञ के अवसर पर मुख्यतिथि बाबू राजेंद्र नाथ जी (उप प्रधान डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली) थे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री चंद्रपाल शास्त्री जी ने यज्ञ की महिमा का गुणगान किया। विद्यालय की रीज़नल डायरैक्टर श्री मती रीना नागरथ व मैनेजर श्री एम. आर. गुप्ता ने यज्ञ के सफल आयोजन के लिए विद्यालय की प्रधानाचार्या व स्टाफ को बधाई दी। इस अवसर पर अम्बाला रीज़न के सभी डी.ए.वी.स्कूलों के प्रधानाचार्य, तथा नारायणगढ़ के आर्य समाज (कॉलेज विभाग) आर्य समाज (गुरूकुल विभाग) महिला आर्य समाज, आर्य समाज बरैली, आर्य समाज हुसैनी, आर्य समाज शहजादपुर के प्रधान एवं सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया तथा सभी ने ऋषि प्रसाद ग्रहण किया।

## डी.ए.वी. के महासचिव श्री आर. एस. शर्मा ने आर्य अनाथालय का दौरा किया

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 1877 स्थापित आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी का इतिहास बहुत ही गौरव एवं प्रशसा योग्य रहा है। पिछले 136 वर्षों में इस आश्रम ने हजारों अनाथ एवं असहाय बच्चों का जीवन निर्माण किया है। आज भी यह संस्था आश्रम में 120 के लगभग बच्चों का पूर्ण रूपेण भविष्य उज्ज्वल बनाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। विगत दिनों डी.ए.वी. कालेज कमेटी नई दिल्ली के माननीय महासचिव, श्री आर.एस. शर्मा जी ने प्रि. एच. आर. गंधारजी के साथ आश्रम का दौरा किया। संस्था प्रबंधक डॉ. सतनाम को ने मान्य पं. सतीश शर्मा एडवोकेट, श्री पवन शर्मा, डॉ. के.सी. अरोड़ा डी.ए.वी. संस्थाओं के प्रिंसीपल एवं अपने सहयोगी जनों सहित मान्य अतिथि का स्वागत किया। शर्मा साहब आश्रम बच्चों के उपयोगार्थ गौशाला के नव निर्मित भवन का निरीक्षण कर प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि प्रकट की। निरीक्षण किया तथा विज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब, बच्चों के बैठने के कक्ष एवं अन्य साधनों को देख प्रसन्नता प्रकट की।

## डी.ए.वी. कॉलेज भटिन्डा में विरजानंद स्मृति समारोह

महाविद्यालय में पूज्य स्वामी विरजानंद समृति समारोह को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय में वैदिक प्रश्नोत्तरी 'कविता लेखन', चित्रकला' आदि प्रतियोगिताओं के रुप में मनाया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org



ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 10 नवम्बर, 2013 से 16 नवम्बर, 2013

# समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

**एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।**
**आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।**

ऋषिः ब्रह्मा। देवता अग्निः छन्दः अनुष्टुप्।

● (अग्ने) हे यज्ञाग्नि! (एताः) ये (ते) तेरे लिए (समिधः) समिधाएँ [हैं], [इनसे] (त्वं) तू (इत्) निश्चय ही (सम् इद्धः) संदीप्त (भव) हो। (अस्मासु) हम [इनसे] (त्वं) तू (इत्) निश्चय ही (सम् इद्धः) संदीप्त (भव) हो। (अस्मासु) हम [ब्रह्मचारियों] में (आयुः) जीवन, [और] आचार्याय (आचार्य) के लिए (अमृतत्वम्) अमरत्व (धेहि) प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक-एक कर अग्नि में आहुति दूंगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य-रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध-अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल-वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु-शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि-समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो। ❑

**वेद मंजरी से**

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

# तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

**पिछले अंक से 'शरीर के तीन उपस्तम्भ' शीर्षक से शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक बातों की चर्चा हो रही है। इसमें सबसे पहले आहार कैसा हो इस पर चर्चा हुई आहार क्या है इसका वर्णन करके स्वाद की बात की गई। भोजन में क्या हो? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए चरक के सूत्र स्थान के अध्याय पांच में भोजन के सम्बन्ध में जो लिखा है उसका वर्णन किया। शरीर में होने वाले रोगों की चर्चा करके कहा की आहार के विषय में पूरा सावधान होना चाहिए। भोजन में गोघृत को रसायन कहकर भोजन के समय मन को प्रसन्न रखने का आदेश दिया। भोजन के समय नासिका का कौन सा स्वर चल रहा है इस पर भी चर्चा की।**

**अब आगे**

### आहार में छः रस

आहार के सम्बन्ध में एक और तत्त्व की बात लिख देना आवश्यक है और वह छः रसों के सम्बन्ध में है। 'चरक-संहिता' के विमानस्थान के पहले अध्याय में बतलाया गया है कि:

"रस-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु, कषाय, ये छः हैं। वे भली प्रकार उपयोग को प्राप्त हुए शरीर की पालना करते हैं और उल्टे उपयोग से दोषों को बढ़ाते हैं। दोष तीन हैं-वात, पित्त और श्लेष्मा। ये ठीक हों तो शरीर के उपकारक होते हैं और विकार को प्राप्त हुए हों तो निश्चय से नाना प्रकार के विकारों से शरीर को दुःखित करते हैं।"

**तत्र दोषमेकैकं त्रयस्त्रयो रसा जनयन्ति, त्रयस्त्रयश्चोपशमयन्ति। तद्यथा-**
**कटुतिक्तकषाया वातं जनयन्ति,**
**मधुराम्ललवणास्त्वेनं शमयन्ति।**
**कटुकाम्ललवणाः पित्तं जनयन्ति,**
**मधुरतिक्तकषायाः पुरनं शमयन्ति।**
**मधुराम्ललवणाः श्लेष्माणं जनयन्ति,**
**कटुतिक्तकषायास्त्वेनं शमयन्ति।।4।।**
**विमानस्थान पहला अध्याय।।**

उसमें से एक-एक दोष को तीन-तीन रस पैदा करते हैं और तीन-तीन उपशमन करते हैं। वे इस प्रकार हैः

**कटु, तिक्त, कषाय-वात को पैदा करते हैं।**
**मधुर, अम्ल, लवण-वात का शमन करते हैं।**
**कटु, अम्ल, लवण-पित्त को पैदा करते हैं।**
**मधुर, तिक्त, कषाय-पित्त को शान्त करते हैं।**
**मधुर, अम्ल, लवण-श्लेष्मा को पैदा करते हैं।**
**कटु, तिक्त, कषाय-श्लेष्मा को शान्त करते हैं।**

मनुष्य-शरीर के योग के अंगों को अनुकूल बनाने के लिए आयुर्वेद के इस तत्त्व को भली प्रकार समझकर प्रयोग में लाइए, निश्चित रूप से आपका स्वास्थ्य तथा शरीर योग के योग्य बन जाएगा।

### निद्रा

आहार के पश्चात् शरीर का दूसरा उपस्तम्भ निद्रा बतलाया गया है। कई बार यह विचार मन में आ जाता है कि यदि भगवान ने निद्रा की देन न दी होती, तो मनुष्य की क्या गति होती?

कितनी उपयोगी, प्यारी तथा मीठी यह देन है। भगवान् ने इसके लिए रात्रि भी बना दी। संसारभर में सारे प्राणी-पशु, पक्षी, जीव, जन्तु, मनुष्य, सब रात्रि को सोते हैं; सिवाय रेलवे समाचार-पत्रों तथा पॉवर-हाउसों (बिजली-घरों) और रात्रि को चलनेवाले अन्य कारखानों में (जिनकी रात्रि की ड्यूटी हो) कार्य करनेवालों के। शेष मनुष्य यदि पीड़ा अथवा रोग और चिन्ता से पीड़ित नहीं है तो इस अत्यन्त मीठी देन का पूरा सुखलाभ करते हैं। हाँ, एक और तरह के लोग भी रात्रि के एक बड़े भाग में नहीं सोते। वे ऐसे तपस्वी महानुभाव हैं जो तत्त्वज्ञान और आत्म-दर्शन में लगे हुए हैं।

निद्रा है तो तमोगुण-प्रधान, परन्तु तमोगुण भी सृष्टि के लिए बड़ी उपयोगी वस्तु है। तम न हो तो यह पृथ्वी ही न हो। मनुष्य तब निवास कहाँ करे और खाये-पिए क्या? ऐसे ही तम न हो तो निद्रा का भी सुखलाभ न हो सके।

### निद्रा से जीवन-बैटरी चार्ज होती है

दिनभर मनुष्य नाना कार्यों में व्यस्त रहता है। इन्द्रियाँ भी और शरीर के सारे अंग भी कार्य करते है। इस परिश्रम से (चाहे यह शारीरिक परिश्रम हो या मस्तिष्क का) मनुष्य-शरीर की जीवनधारा प्रतिक्षण व्यय होती रहती है। परिश्रम करते-करते एक समय ऐसा आ जाता है जब आप यह अनुभव करते हैं कि 'मैं अब थक गया हूँ।' यह थकावट न खान-पान से, न किसी मन्त्र-औषध से दूर होती है, अपितु इस थकावट को दूर करनेवाली निद्रा ही है।

जिस प्रकार मोटर में बैटरी (Battery) खर्च होती रहती है और जब यह काम न दे तो आप उसे वर्कशॉप में भेज देते हैं ताकि उसे फिर भरवाया (Recharge) जा सके, इसी प्रकार मनुष्य का थका हुआ शरीर भी जब निद्रा की गोद में दे दिया जाता है तो निद्रा उसे अपनी शक्ति से पुनः कार्य करने के योग्य बना देती है; परन्तु निद्रा शरीर की न्यूनता को पूर्ण रूप से पूरा नहीं कर सकती। यदि निद्रा उस कमी को सर्वथा पूर्ण कर दिया करती तो मनुष्य कभी वृद्ध ही न होता, युवक ही बना रहता। परन्तु निद्रा मनुष्य को सौ, दो सौ, तीन–चार सौ वर्षों तक जीवित रखने की सामर्थ्य दे सकती है।

शरीर की थकावट दूर करने की एक अद्भुत शक्ति निद्रा को प्राप्त है। मेरा एक अनुभव सुनिए 1951 में गंगोत्री के पवित्र वन में योग–निकेतन में वास करने के पश्चात् वहाँ से लगभग 56 मील दूर उत्तरकाशी की ओर चला, तो मार्ग में रात्रि–विश्राम के जो स्थान आते हैं, उनमें सफाई न रहने के कारण पिस्सू तथा खटमलों का राज्य हो गया था। दिनभर ऊँची–नीची घाटियों तथा नदी–नालों को पार करके थके–माँदे जब 'चिट्ठी' (विश्राम–स्थान) पर पहुँचते और भूमि पर लेट जाते तो लेटते ही निद्रा आने के स्थान पर पिस्सू तथा खटमल पास आ जाते। निद्रा आने लगती तो वे काटना आरम्भ कर देते। रात खुजलाते ही व्यतीत हो जाती। अगली प्रातः फिर चलना होता। थके हुए शरीर ही के साथ चल पड़ते और रात्रि को अगले पड़ाव पर फिर पिस्सू व खटमल स्वागत के लिए तैयार मिलते। चार रात्रियाँ इसी प्रकार काटनी पड़ीं। शरीर सर्वथा शिथिल और जीवन–हीन प्रतीत हो रहा था। परन्तु उत्तर काशी में जब पाँचवीं रात्रि को विश्राम किया तो स्वप्न–अवस्था के पश्चात् सुषुप्ति–अवस्था प्राप्त हो गई और इतनी गहरी गंभीर निद्रा आई कि प्रातःकाल जब उठे, तो शरीर सर्वथा थकानरहित हो चुका था। शिथिलता, शरीर का भारीपन और आलस्य इत्यादि सब भाग चुके थे। निद्रा को इसीलिए विष्णु की माया कहा है। न इसका कोई रंग है, न रूप; न यह हाथ से स्पर्श की जा सकती है, न जिह्वा से चखी और न नासिका से सूँघी जा सकती है; परन्तु इसका स्वाद मन द्वारा बिना किसी बाह्य इन्द्रिय की सहायता के अवश्य लिया जा सकता है।

**प्रभु की अद्भुत देन निद्रा**

ऐसी सुन्दर देन का भी मनुष्य ने मान नहीं किया; लोभ, काम इत्यादि के वश होकर इसका भी तिरस्कार कर दिया।

बम्बई के एक धनी के सम्बन्ध में बतलाया जाता है कि उसने जब व्यापार आरम्भ किया तो रात्रि को 2–3 बजे तक वह हिसाब–किताब में ही (संलग्न रहता था। निद्रा तो आती थी परन्तु जब भी निद्रा आकर सेठ को अपनी गोद में लेने का यत्न करती तो सेठ उठकर आँखों पर जल के छींटे देकर निद्रा को भाग देता। निरन्तर कई वर्ष बार–बार ऐसा करने से निद्रा ने सेठ के पास आना छोड़ दिया। इस परिश्रम से सेठ के पास धन तो पर्याप्त हो गया, परन्तु निद्रा चली गई। सेठ अब लाख यत्न करता है किसी प्रकार कुछ ही घड़ियाँ निद्रा आ जाए, परन्तु निद्रा लाने वाली ओषधियाँ भी निद्रा लाने में सफल न हो सकीं। उसने तब विज्ञापन दिया कि जो कोई बिना किसी ओषधि के उसे निद्रा लाने में सफल होगा, उसे एक लाख रुपया दिया जाएगा।

मैंने तब कहा, जब धन पास नहीं था तो निद्रा स्वयमेव आती थी और सेठ जी पानी की बौछार निद्रा पर छोड़कर उसे भगा देते थे। निद्रा चली गई और धन आ गया तो अब सेठ जी धन को धक्का दे रहे हैं और निद्रा को लाना चाहते हैं; परन्तु अब ऐसा हो नहीं सकेगा। धन से निद्रा नहीं खरीदी जा सकती। यह तो प्रभु की अमूल्य देन है। जो पूरी निद्रा नहीं ले सका, वह भजन में स्वस्थ और सावधान होकर नहीं बैठ सकता। उसे जम्हाईयाँ आती ही रहेंगी।

इस अवस्था को 'सुश्रुत' में जृम्भा कहा गया है। सुश्रुत में यह भी बतलाया गया है कि निद्रा का नाश क्यों होता है। श्री धन्वन्तरि जी बतलाते हैं कि–"वायु और पित्त से, मन के सन्ताप (चिन्ता अथवा सोच–विचार) से और चोट आदि की पीड़ा से निद्रा का नाश होता है और इनके विपरीत भावों से निद्रा–नाश की शान्ति होती है।"

**सच्ची निद्रा कैसे?**

उन्होंने निद्रा–नाश को दूर करने का उपाय भी बतलाया है और वह यह कि– "शरीर पर तेल मलकर उबटन मलना और स्नान करना चाहिए तथा शरीर पर तैल–मर्दन और हाथ–पाँव धीरे–धीरे दबाना"– इस शारीरिक उपचार के साथ यह भी आवश्यक है कि मन में जिस बात से सन्ताप या चिन्ता हो रही है, उसे मन से निकाल दिया जाए।

कितने ही तमोगुण–प्रधान प्रकृतिवालों को निद्रा बहुत अधिक आती है; जब देखो सोए हुए हैं। कितने ही साधक यह शिकायत करते हैं कि जब भजन में बैठते हैं तो निद्रा या तन्द्रा के झोंके आने लगते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए धन्वन्तरि जी बतलाते हैं कि "यदि निद्रा अधिक आती हो तो वमन कराएँ तथा विरेचनादि द्वारा पेट–शोधन करें, लंघन (उपवास) कराएँ और रक्त निकालवाएँ, या फिर कोई अच्छी–सी चिन्ता लगा लें।"

स्वाभाविकी निद्रा के सम्बन्ध में 'सुश्रुत' में यह आदेश है–"स्वाभाविक तमोगुण की बाहुलता वाले मनुष्यों को दिन में भी निद्रा आती है और रात्रि में भी अतिनिद्रा आती है। रजोगुण की प्रधानता–वालों को बेनियम कभी–कभी दिन में और कभी–कभी रात्रि में निद्रा आती है तथा सत्त्वगुण की बाहुलता वालों को अर्ध–रात्रि के समय (थोड़ी–सी निद्रा) आया करती है।"

इससे अगले वचन में धन्वन्तरि जी कहते हैं– "जिनका कफ क्षीण हो जाए, वायु बढ़ जाए, अथवा मन या शरीर में सन्ताप हो, उन मनुष्यों को प्रायः निद्रा नहीं आती। यदि आ ही जाए तो उसे वैकारिकी निद्रा कहते हैं।"

अतिनिद्रा भी ठीक नहीं और अतिनिद्रा–नाश भी ठीक नहीं। दोनों अतियों को त्यागकर इतनी निद्रा लेना आवश्यक है जिससे शरीर का भारीपन, थकावट इत्यादि जाती रहे और भजन तथा साधना के समय आलस्य तथा प्रमाद आक्रमण न कर दें।

जिनका आहार स्वास्थ्यप्रद है और जिनके मन में कोई चिन्ता बैठी वहाँ घाव नहीं कर रही, वे सुन्दर सच्ची निद्रा का सुख लेकर शरीर को नीरोग रख अपनी साधना में लग सकते हैं। यह शरीर के दो उपस्तम्भों का वर्णन हुआ। अब तीसरे की बात सुनिए।

**ब्रह्मचर्य**

ब्रह्मचर्य बड़ा पवित्र और चित्ताकर्षक शब्द है। इसका कार्य है–ब्रह्म भगवान् में विचरना। निस्सन्देह ब्रह्म में वही विचर सकता है, जो अपने शरीर के वास्तविक भौतिक लक्ष्य वीर्य या शुक्र को अपने वश में रखता है। मनुष्य जो अन्न खाता है, उसे पेट की जठराग्नि पचाती है और एक विशेष रसायन अन्न में मिलाकर रस का रूप धारण कराती है। यह रस फिर क्या–कुछ करता है, इसका बड़ा सुन्दर विवरण धन्वन्तरि जी महाराज ने सुनाया है। वे कहते हैं कि:

**रसः प्रीणयति रक्तपुष्टिं च करोति, रक्तं वर्णप्रसादं मांसपुष्टिंजीवयति च, मांसं शरीरपुष्टिं मेदसश्च, मेदः स्नेहस्वेदौ दृढत्वं पुष्टिमस्थ्नां च, अस्थि देहधारणं मज्जापुष्टिं च, मज्जा प्रीतिं स्नेहं बलं शुक्रपुष्टिं पूरणमस्थ्नां च करोति, शुक्रं धैर्यं च्यवनं देहबलं हर्षबीजार्थं च।।5।।**

(सुश्रुत सूत्रस्थान अ० 15)

'रस तृप्तिकारक है और रुधिर की पुष्टि करता है रुधिर वर्ण को श्रेष्ठ करता है, मांस की पुष्टि करता है तथा जिलाता है (उस रक्त से शरीर में जो मांस बनता है वह) मांस शरीर को पुष्ट करता है तथा मेद का पोषण करता है। मेद (चर्बी) स्निग्धता, पसीना, दृढ़ता लाकर अस्थियों का पोषण करती है। अस्थि देह को धारण करती है और मज्जा की पुष्टि करती है यह मज्जा प्रसन्नता, स्निग्धता, बल और वीर्य को उत्पन्न करती है, शुक्र की पुष्टि और अस्थियों को पूर्ण करती है तथा सन्तानोत्पत्ति का कारण है।'

इस वीर्य के पश्चात् इसी वीर्य से शरीर में एक अद्भुत शक्ति उत्पन्न होती है जिसका नाम धन्वन्तरि जी ने 'ओज' बतलाया है। यही आत्मदर्शन कराने में सहायक बनता है। जो लोग वीर्य का अधिक व्यय करते देते हैं, उनको ओज प्राप्त नहीं होता। ऐसे लोगों का आत्मा बलवान् नहीं हो सकता। न ही वे अपने स्वरूप को देख सकते हैं। वीर्य–जैसे बहुमूल्य रत्न को पूरी सावधानी से सँभालकर रखने की आवश्यकता है क्योंकि "ब्रह्मलोक केवल उन्हीं लोगों को मिलता है जो इस ब्रह्मलोक को ब्रह्मचर्य से ढूँढते हैं; ऐसे ही लोगों को सारे लोकों में स्वतन्त्रता होती है।

वीर्य किस प्रकार से सात–आठ मंजिलों से गुजरकर अन्तिम रूप धारण करता है, यह 'सुश्रुत' से ज्ञात हो जाता है। वीर्य शरीर का आधार–स्तम्भ है और साथ ही आत्म–दर्शन का भी। यह लोक–परलोक दोनों का देनेवाला है। इसीलिए इसको यज्ञ भी कहा गया है।

**ब्रह्मचर्य : एक यज्ञ**

छान्दोग्य–उपनिषद् के आठवें प्रपाठक का पाँचवाँ खण्ड ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में विशेष प्रकाश डालता है। उसमें ब्रह्मचर्य को यज्ञ बतलाते हुए लिखा है:

**अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद् ब्रह्मचर्येण ह्येव यो ज्ञाता तं विन्दते अथ यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्, ब्रह्मचर्येण ह्यवेष्ट्वात्मानमनुविन्दते।।1।।**

'जिसको (धार्मिक लोग) यज्ञ कहते हैं, वह वास्तव में ब्रह्मचर्य ही है क्योंकि ब्रह्मचर्य के द्वारा ही उस परमात्मा को (ब्रह्मचर्य को) पा सकते हैं; और जिसको इष्ट कहते हैं वह वास्तव में ब्रह्मचर्य ही है क्योंकि ब्रह्मचर्य के द्वारा ही, वह ढूँढ करके (इष्ट्वा आत्मा) को पा लेता है।'

**अथ यत् सत्रायणमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्, ब्रह्मचर्येण ह्येव सत आत्मनस्त्राणं विन्दते। अथ यन्मौनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्, ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनुविद्य मनुते।।2।।**

'जिसको लोग सत्रायण कहते हैं वह वास्तव में ब्रह्मचर्य है, क्योंकि ब्रह्मचर्य के द्वारा ही यह सत् (सत्य ब्रह्म) आत्मा की रक्षा (त्राण) को पाता है; और जिसको मौन कहते हैं वह वास्तव में ब्रह्मचर्य ही है क्योंकि ब्रह्मचर्य के द्वारा ही पुरुष आत्मा को ढूँढकर उसपर ध्यान जमाता है।"

यहाँ इष्ट–यज्ञ तथा सत्रायण–यज्ञ का वर्णन किया गया है। इष्ट का प्रयोजन 'इष्ट्वा' (आत्मा) को ढूँढ निकालना है और सत्रायण का प्रयोजन–सतः त्राणम् (सत् सत्यब्रह्म से) अपनी आत्मा की रक्षा से है।

शेष अगले अंक में....

www.thearyasamaj.org



# सत्य न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द सरस्वती

● प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

स्वामी दयानंद का जन्म सौराष्ट्र (गुजरात) टंकारा, मौरवी में हुआ था। इनके पिताजी कर्षणजी तिवारी औदीच्य कुल के सामवदी ब्राहमण थे। वे निष्ठावान शिव भगवान के भक्त थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम ''मूलशंकर'' रखा था। सो स्वामी दयानंद का जन्म से नाम मूलशंकर था। सामवेदी ब्राहमण होने पर भी पिताजी ने मूलशंकर को यजुर्वेद की रुद्राष्ढाध्यायी कंठस्थ करा दी थी। कर्षण जी अपने पुत्र मूलशंकर को भगवान शिव जी की कहानियाँ बड़ी निष्ठा से सुनाया करते थे। पिताजी के आग्रह पर मूलशंकर ने 14 वर्ष की आयु में पूर्ण श्रद्धा भक्ति के साथ शिवरात्रि का व्रत किया। दिनभर भगवान शिव की कथा वार्ता होती रही और मूलशंकर ने दृढ़ता से उपवास किया था। सायंकाल पिताजी मूलशंकर को साथ ले, शिव के पूजन की सामग्री लेकर गाँव के बाहर मंदिर में शिवरात्रि का पूजन करने के लिए गए। मूलशंकर के पिताजी बड़े धनाढ्य संपन्न ब्राहमण थे। शिवरात्रि में शिव की पिंडी का पूजन बड़े ठाठ–बाट, घटाटोप से हुआ। दूसरे पहर का पूजन भी हो गया। तीसरे प्रहर में निद्रा देवी ने सबको दबा दिया। मूलशंकर के पिताजी और मंदिर के पुजारी जी, सभी निद्रा के वश में हो गए, सिर्फ मूलशंकर पूरी श्रद्धा भक्ति से जागते रहे। मंदिर में पूर्ण नीरवता, शांति छाई हुई थी। इतने में मंदिर के इधर उधर से दो चार चूहे पिंडी पर अर्पित साम्रगी को खाने के लिए शिव की पिण्डी पर उछल कूद करने लगे। मूलशंकर के हृदय में प्रभु–कृपा से सत्य का प्रकाश हुआ। उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि यह पिण्डी कल्याणकारी भगवान शिव, कैलाशवासी, तांडवकारी भगवान् शंकर नहीं हो सकती। यह सत्य के प्रति प्रथम आग्रह था। उन्होंने पिताजी को जगाया किन्तु पिताजी और पुजारी मूलशंकर को संतुष्ट नहीं कर सके और सत्य के प्रति आग्रही मूलशंकर घर आ गए। सत्य के प्रति यह परम दुर्दान्त आग्रह स्वामी दयानन्द मे संपूर्ण जीवन में बड़ी दृढ़ता से बना रहा और स्वामी दयानन्द ने यावत् जीवन सत्य का प्रचार किया और किन्हीं भी परिस्थितियों में सत्य के साथ कोई समझौता नहीं किया।

स्वामी दयानन्द ने अपने युगान्तरकारी कालजयी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' की भूमिका में लिखा है ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुका जाता है'' स्वामीजी ने वहीं भूमिका में पुनः लिखा है– ''विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मित्यार्थ का परित्याग करके सदा आनंद में रहे।'' वहीं पुनः लिखते हैः ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात जो–जो बातें अनुकुल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक–दूसरे के विरूद्ध बातें हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्ते वर्तावें, जो जगत का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध में अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।'' यह उद्धरण किसी समीक्षा या व्याख्या की आकांक्षा नहीं करते।

स्वामी दयानन्द सत्य के प्रति इतने आग्रहवान थे कि उन्होंने आर्य समाज का चौथा नियम यह बनाया कि ''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' स्वामी जी ने पुनः पाँचवे नियम में यह व्यवस्था दी है कि ''सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करने चाहिए।''

सत्य और न्याय एक–दूसरे के साथी हैं। जहाँ सत्य का पालन होगा वहाँ न्याय स्वतः होता रहेगा। जिस युग में स्वामीजी ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया। उस समय कई प्रकार के अन्याय समाज में परिवारों में प्रचलित हो गए थे। सामाजिक रूप में छुआ–छूत भयानक रूप से चल रहा था। अछूतों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। परिवारो में स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उनके साथ प्रायः दासियों जैसा व्यवहार होता था। स्त्रियाँ सब प्रकार से तिरस्कृत और पैर की जूतियाँ समझी जाती थीं। स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। स्वामी दयानन्द ने बड़े क्षोभ और उग्रता से इस अन्याय का विरोध किया। लड़कियों के लिए पाठशाला की व्यवस्था की और अछूतों के लिए छुआ–छूत के भेद भाव दूर कर दिए और उनके लिए भी पढ़ने की व्यवस्था की।

उस युग में बाल–विवाह बहुत प्रचलित था। आठ–दस वर्ष की लड़कियाँ भी बूढ़ों और अधेड़ों को ब्याह दी जाती थीं। विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और विधवा–विवाह धर्म–विरुद्ध माना जाता था। ये बाल–विधवाएँ या तो वेश्या बन जाती थीं या देवदासियाँ बन जाती थीं। स्वामी दयानन्द ने इन सभी अन्यायों का डटकर विरोध किया। आर्य समाज ने अपने मंदिरों से छुआ–छूत को हटाया और बाल–विवाह के विरूद्ध सामाजिक आन्दोलन किया। हिन्दू समाज में विधवा विवाह आरम्भ हो गया। प्रत्येक आर्य समाज मंदिर में कन्याओं को पढ़ाने के लिए पाठशालाएँ खुल गयीं। अछूतों को आर्य समाज के विद्यालयों और छात्रावासों में बिना किसी रोक–टोक के प्रवेश मिलने लगा। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सामाजिक बहिष्कार का दण्ड भी भोगना पड़ा किन्तु स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के फलस्वरूप ये सामाजिक आन्दोलन बढ़ता ही गया और छुआ–छूत मिटने लगा तथा स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह सामाजिक अधिकार मिलने लगा। उन्हें सब प्रकार से उन्नति का अवसर सुलभ हो गया।

संस्कृत और हिंदी की शिक्षा की बड़ी उपेक्षा हो रही थी। संपन्न लोग उर्दू और फारसी पढ़ रहे थे। स्वामी दयानन्द ने अपने संगठन में सारे कामों को हिंदी में करने का अनिवार्य नियम बना दिया।

स्वामी दयानन्द के इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि अछूत कुलों के विद्यार्थी भी बड़े–बड़े विद्वान, आचार्य, वेदपाठी, अध्यापक बनने लगे और बिना किसी भेद–भाव के पण्डितों की मण्डली में प्रतिष्ठित होने लगे। स्त्रियाँ भी संस्कृत और वेद की उच्चकोटि की विदुषी बनने लगीं और पुरूषों के समान ही वेदों की पण्डिता भी होने लगीं। इधर छुआ–छूत को दूर करने का प्रयास महात्मा गांधी ने भी किया और राष्ट्र की आत्मघाती छुआ–छूत की प्रथा समाप्त होने लगी। छूत–अछूत, सर्वण–असवर्ण, सब बिना किसी भेदभाव के चाय, नमकीन, समोसे, मिठाई आदि खाने पीने लगे। इस बीच मण्डल, कमण्डल, सच्चर आदि कमीशनों, कमेटियों की रिपोर्टों ने जातिगत भावना को भड़का दिया। राष्ट्र की एकता की इस आत्मघाती नीति को राजनीतिक दलों ने भी अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण खूब बढ़ावा दिया। अब तो ऐसा लगने लगा है कि अछूत जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, सभी को राष्ट्र की एकता के विभाजन का राष्ट्रघाती पुरस्कार मिलने लगा है और स्वार्थी राजनीति इन्हें चिरस्थायी करने पर तुली हुई है। स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी की राष्ट्र–हितैषी छुआ–छूत को दूर करने की नीति को ही राजनीति ने निर्ममता से समाप्त कर दिया है।

**वेदों को अपनाने का सिद्धांत :** स्वामी दयानन्द का सुविचारित निश्चय था कि जब तक भारतवर्ष ने वेदों की शिक्षा को अपने राष्ट्रीय जीवन में अपना रखा था तब तक देश की सर्वांगीण उन्नति हुई और देश संसार के सभी देशों का शिरोमणि बना रहा। स्वामी जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम ही बना दिया। – ''वेदों का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' वेदों को अपनाने के अनेकों कारण थे। वेद पुरूषार्थ और कर्मण्यता का उपदेश देते हैं, भाग्य, नियति का विरोध करते हैं–''कुरुवन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेत्''– यावत् जीवन कर्म करते हुए जीने की इच्छा करो। परमेश्वर ने मानव योनि को उन्नति करने तथा दक्षता प्राप्त करने के लिए बनाया है –''उद्यानम् ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि'' – वेद कर्म न करने वालों को कामचोर, 'दस्यु' कहता है, ऐसे परजीवियों, पैरासाइटों को दण्ड देने का आदेश देता है। अकर्मा दस्युः बधीः दस्युं'' परमेश्वर ने मनुष्य को उचित, अनुचित परखने की शक्ति दी है वेद कहते हैं – अश्रद्धाँ अनृते दधात्, श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः''। वेदों में पाप क्षमा का सिद्धांत नहीं है। पाप या पुण्य, सबका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है – ''अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभं''। वेदों में सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति का परिपूर्ण उपदेश हुआ है। वेद में कृषि, वाणिज्य, उद्योग, सबकी शिक्षा है। वेद में सब विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों में पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष और द्युलोक पर्यन्त सब ज्ञान का परिपूर्ण वर्णन है। वेद में स्वराज्य की बड़ी महिमा है। अनेक मन्त्रों में ''अर्चननु स्वराज्यम'' का सम्पुट हुआ है। वेद में प्रखर राष्ट्रवाद की महिमा का वर्णन है। प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र में सब प्रकार के विद्वान, योद्धा, विदुषी स्त्रियाँ और बलवान गाय, घोड़े, पशु आदि हों। वेद में मातृभूमि की बड़ी उत्कृष्ट भावना विद्यमान है। अथर्ववेद में भूमिसूक्त में कहा गया है – 'माता भूमिः, पुत्रोऽहम् पृथिव्याः''। मातृभूमि की यह प्राचीनतम प्रतिष्ठा है। वेद में विश्व–सरकार और विश्व–नागरिक का भी वर्णन है। वेद में विश्वनागरिक को ''विश्वमानुष'' कहा गया है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी अधिक उत्कृष्ट वेदों में पाई जाती है।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए भी सत्य, न्याय और वेद का प्रचार किया। मानव जाति के कल्याण में ही उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर दिया। सत्य की रक्षा के लिए ही उन्हें धोखे से विषपान कराया गया और 1963 ई. मे दिवाली की सध्या को उनका देहांत हो गया। ऐसे महात्मा का पुण्य स्मरण भी सौभाग्य है।

पी–30, कालिन्दी हाउजिंग स्कीम,
कोलकाता–700081
दूरभाषः 09432301602/
(033)25222636

# गुरु विरजानंद का संक्षिप्त जीवन परिचय

● रामदास 'सेवक'

जन्म– पंजाब प्रान्त के जालन्धर **शहर** से 9 मील दूर **करतारपुर** कस्बे के समीप **गंगापुर गाँव** में **सम्वत् 1836 (सन् 1779)** कार्तिक मास में विरजानंद का जन्म हुआ।

इनके पिता का नाम **नारायण दत्त शर्मा** था जो सारस्वत ब्राह्मण थे। इन की माता का नाम **सरस्वती** था। इन का गोत्र–भारद्वाज था।

**बाल्यकाल एवं शिक्षा– (शीतला) चेचक** के प्रकोप से 5–6 वर्ष की अवस्था में आपकी दोनों आँखे चली गईं।

6 वर्ष की अवस्था में विद्यारम्भ तथा 8वें वर्ष में आप का **उपनयन संस्कार** किया गया। आप घर में पिता के चरणों में बैठकर संस्कृत पढ़ने लगे। **अमरकोष** बचपन में ही कण्ठस्थ हो गया था जब **सारस्वत व्याकरण** साधनिका सहित पढ़ चुके तब इन के माता–पिता का देहान्त हो गया। उस समय यह बारह वर्ष के थे। ये उर्दू–फारसी के भी अच्छे ज्ञाता थे।

**स्वभाव**– विरजानन्द बाल्यकाल से बड़े तेजस्वी, अड़ियल, स्वाभिमानी, असहिष्णु, क्रोधी एवं कठोर स्वभाव के थे तथा शीघ्र ही गंगापुर में **दुर्वासा** नाम से प्रसिद्ध हो गए।

**भावज के व्यंग्य बाण से गृहत्याग**– माता–पिता के निधन के बाद विरजानन्द अपने बड़े भाई **धर्मचन्द** एवं भावज के आश्रित हो गए। भावज को अन्न–वस्त्र आदि का व्यय अखरने लगा तथा बात–बात में बालक को व्यंग्यबाण मारती तथा कटुक–भाषा का प्रयोग करती थी– जिसे स्वाभिमानी विरजानंद सहन न कर सका। अन्ततः विवश होकर 13 वर्ष की अवस्था में बिना किसी से कुछ कहे चुपचाप घर से चले गए।

**ऋषिकेष में गायत्री जाप**– दो–ढाई वर्ष तक धीरे–धीरे पैदल चलते हुए विरजानंद **ऋषिकेश** पहुँचे और यहाँ का सुरम्य वातावरण देखकर गंगा किनारे ठहर गए। वह आकण्ठ गंगा–जल में खड़े होकर गायत्री जाप करने लगे। वह रात को बहुत कम सोते थे और अधिकांश समय गायत्री जाप में लीन रहते थे।

**कठोर तप एवं दैवी वाणी का होना**– तीन वर्ष तक उस बाल तपस्वी ने कठोर तपस्या की। इस के इस उग्र तप को देखकर सभी जन हैरान होते थे।

एक बार रात को सोते हुए उसे अन्तःकरण में कुछ शब्द सुनाई दिए ''विरजानंद तुम्हारा काम हो गया अब तुम आगे बढ़ो।'' यह शब्द सुनकर उस की नींद भंग हो गई। उन्होंने बहुत देर तक चिन्तन किया और इन शब्दों को **दैवी वाणी** समझकर वहाँ से हरिद्वार को प्रस्थान किया।

**हरिद्वार में संन्यास दीक्षा**– हरिद्वार पहुँच कर इस तपस्वी बालक ने उच्च कोटि के विद्वान् एवं महान् तपस्वी श्री पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास–दीक्षा ली और अब इस का नाम विरजानंद सरस्वती हो गया। उस समय इन की आयु 18 वर्ष (सन् 1797 में) थी। विरजानंद ने गुरु पूर्णानन्द से सिद्धान्तकौमुदी पढ़ी एवं अन्य शास्त्रों का भी ज्ञान प्राप्त किया।

अब विरजानंद जी ने अध्ययन के साथ–साथ अध्यापन भी प्रारम्भ कर दिया था। इस अभयास ने उन्हें पण्डित एवं अनुभवी गुरु बना दिया। यहाँ उन्हें मेधा–बुद्धि के साथ–साथ काव्य रचना में भी रुचि हो गई। अब गुरु जी ने विरजानंद को महाभाष्य पढ़ने हेतु काशी जाने की प्रेरणा दी। इस प्रेरणा से उत्साहित होकर अगले दिन एक शिष्य के साथ वह काशी के लिए चल दिए।

**कनखल में शास्त्रार्थ**– हरिद्वार से कनखल पहुँच कर वहाँ कुछ पण्डितों से कनखल शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार हुआ। विरजानंद ने निर्वचन किया। **'को न खलः तरति यत्र स कनखलो नाम ग्रामः' अर्थात्** कौन खल (दुष्ट, पापी) यहाँ (गंगावास कर) आकर नहीं तरता– वह ग्राम कनखल है अर्थात् कनखल में रहकर सभी तर जाते हैं। इस पर वहाँ के पण्डितों से आप का शास्त्रार्थ हुआ। आप के वैदुष्य से वे बड़े प्रसन्न हुए और बहुत सत्कार किया। वे आप को यहाँ रोकना चाहते थे परन्तु आप नहीं माने।

**काशी आगमन, विद्या अध्ययन और पण्डितों में खलबली**– मंदगति से गंगा तट पर चलते हुए लगभग 1 वर्ष में काशी पहुँचे। यात्रा में भी पठन–पाठन होता था। संस्कृत भाषण विरजानंद के लिए कामधेनु रूप था। इस से उन्हें सर्वत्र गौरव प्राप्त था। जब काशी पहुँचे तो लगभग 22 वर्ष के थे। वहाँ एक संन्यासी के आश्रम में ठहरे।

कहा जाता है कि काशी में किसी विद्याधर पण्डित से अध्ययन किया। ईर्ष्यालु लोगों के रोकने पर भी विद्याधर ने विरजानंद को पढ़ाना जारी रखा **महाभाष्य** संभवतः पण्डित विधाधर ने ही पढ़ाया था। व्याकरण के अतिरिक्त **वेदान्त मीमांसा** तथा **न्याय** का भी अध्ययन काशी में किया।

काशी में रहते हुए विरजानंद जी बड़े–बड़े पण्डितों से व्याकरण पर प्रश्न करते थे– उत्तर न मिलने पर स्वयं समाधान करते थे। इन प्रश्नों ने पण्डित मण्डली में खलबली मचा दी और सर्वत्र इन की ख्याति फैल गई। परिणामस्वरुप विरजानंद को सम्पूर्ण पण्डित–मण्डली में चौथा स्थान प्राप्त हो गया। काशी में ही वे **प्रज्ञाचक्षु** उपाधि से विभूषित हुए। अब दण्डी जी को बड़ी–बड़ी सभाओं में निमंत्रित किया जाने लगा तथा दक्षिणा आदि से सत्कार किया जाता था। दण्डी जी यहाँ लगभग दस वर्ष रहे।

**काशी से गया प्रस्थान**– दण्डी जी ने काशी से गया की ओर प्रस्थान किया। अब इन के पास पुस्तकों का पर्याप्त भार हो गया था अतः पुस्तकें उठाने हेतु एक भारवाहक भृत्य (कुली) रख लिया। मार्ग नें कुछ डाकुओं ने इन्हें लूटना चाहा परन्तु **ग्वालियर** राज्य के किसी **जागीरदार** ने इन की रक्षा की। यह जागीरदार दण्डी जी को अपने निवास स्थान पर ले गया और **5 दिन** तक बहुत अतिथि सत्कार किया। छठे दिन दण्डी जी आगे की ओर चल पड़े।

**गया** पहुँचकर दण्डी जी ने अध्ययन की सुविधा देखकर, उपनिषदों का पुनः गहन अध्ययन किया। वे यहाँ लगभग तीन वर्ष तक रहे। फिर तटानुतट गंगासागर तक जाकर वहां से **कलकत्ता** पहुँचे।

**कलकत्ता निवास**– कलकत्ता उस समय भारत की **राजधानी** थी। यहाँ भी उस समय उच्च विद्वानों का निवास था। यहाँ दण्डी जी ने साहित्य के उच्च ग्रंथ– **साहित्य दर्पण, कुवलयानन्द, काव्यप्रकाश** आदि तथा नवीन व प्राचीन **न्याय** के ग्रंथों का सम्यक् अध्ययन–अध्यापन किया। यहाँ आपने **आयुर्वेद, संगीत, वीणावादन** तथा अन्य अनेक कलाओं में कुशलता प्राप्त की। यहीं पर वे **शतरंज** के बड़े खिलाड़ी बने।

**महान् दोषज्ञ**– संस्कृत में **दोषज्ञ** शब्द पण्डित का पर्याय होता है। जो मनुष्य दोषों को (त्रुटियों) भली प्रकार जानता है वही दूसरों के छिद्र भी पकड़ सकता है और स्वयं भी उन छिद्रों से बचा रहता है। दण्डी जी पूर्ण दोषज्ञ थे अर्थात् किसी का भी छिद्र उन से बच नहीं पाता था– इस कारण बड़े–बड़े विद्वान् उन से पराजित हो जाते थ। दण्डी जी कलकत्ता में कई वर्ष रहे अनेक छात्रों का विभिन्न विषय पढ़ाए। अपनी विद्वत्ता एवं गुणों से महान् ख्याति प्राप्त की।

अनेक उदार सज्जनों ने दण्डी जी के लिए आवास, यान, भोजन, वस्त्र, नौकर आदि का उचित प्रबंध करके उन को कलकत्ता रखना चाहा – परन्तु वे विरक्त संन्यासी नहीं रुके। अतः एक रात चुपचाप वहाँ से चल पड़े।

पुनः हरिद्वार आ गए। गंगा प्रदक्षिणा भी पूरी हो गई और पूज्य गुरु पूर्णानन्द सरस्वती के भी दर्शन हो गए। पूर्णानन्द जी अपने शिष्य की महती उन्नति तथा प्रतिभा को देखकर प्रसन्न हुए। उस समय गुरु जी–76 वर्ष तथा शिष्य दण्डी जी की आयु 45 वर्ष थी। गुरु जी का शुभ आशीर्वाद लेकर अपने इच्छित स्थान सोरों को चल दिए।

**सोरों निवास**– दण्डी जी का–यह सोरों आगमन तीसरी बार था। इस से पूर्व काशीगमन तथा हरिद्वार के निवृत्ति काल में भी दो बार सोरों ठहरे थे। यहाँ आकर वे **गढ़िया घाट** में ठहरे। कुछ दिन यहां रहकर फिर सोरों में इच्छित स्थान पर निवास किया। अब अनेक छात्र उन से पढ़ने लगे। बदरिया के **अंगदराम, बुद्धसेन** आदि यहाँ पर मुख्य शिष्य थे।

**अलवर नरेश विनय सिंह से भेंट**– एक बार दण्डी जी गंगा में खड़े होकर शंकराचार्य रचित विष्णुस्तोत्र की आवृत्ति कर रहे थे। पंजाबी होते हुए भी उनका संस्कृत–उच्चारण बहुत ही शुद्ध एवं सरस था। अलवर नरेश **विनय सिंह** भी–उस समय वहाँ स्नान हेतु आए हुए थे। वह दण्डी जी के इस मधुर–सरस स्तोत्र को सुनकर मन्त्र–मुग्ध हो गए। स्तोत्र पाठ के उपरान्त वे दण्डी जी के पास आए और यथोचित अभिवादन करके अपने साथ अलवर चलने की प्रार्थना की। तब दण्डी जी ने उत्तर दिया, ''आप राजा हैं और मैं त्यागी। मेरा आप का क्या सम्बन्ध? मैं आप के साथ क्यों जाऊँ?'' विनय सिंह ने नम्रतापूर्वक कहा, ''महात्मन्! मैं भी संस्कृत प्रेमी हूँ तथा आप से धर्मशास्त्र, **सिद्धान्तकौमुदी** आदि पढ़ना चाहता हूँ। कृपया मुझे निराश न करें।'' बहुत अनुनय करने पर दण्डी जी इस शर्त पर मान गए कि, ''राजन्! आप को प्रतिदिन मुझ से 3 **घण्टे** पढ़ना होगा– यदि किसी दिन पढ़ने नहीं आए तो मैं आप का राज्य छोड़कर चला जाऊँगा।'' विनय सिंह ने इस शर्त को स्वीकार किया तथा सम्मानपूर्वक दण्डी जी को अपने साथ अलवर ले आए।

**विनय सिंह का विद्याप्रेम एवं अनमोल पुस्तकालय**– राजा विनय सिंह अति कुशाग्रबुद्धि, विद्याप्रेमी तथा विनयशील थे। उन्होंने न केवल स्वंय परिश्रम–पूर्वक संस्कृत पढ़ी थी अपितु रानियों को भी पढ़ाई थी। उन की सभा में उच्च कोटि के विद्वान्, संगीताचार्य, चित्रकार आदि कलाकार थे।

विनय सिंह का अपना दुर्लभ ग्रंथो का अनमोल पुस्तकालय था। जिसमें संस्कृत के साथ–साथ अरबी–फारसी के

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

www.thearyasamaj.org



# जिन्हें हम भूल गए हैं–देश भक्त लाला हरदयाल

● डा. सहदेव वर्मा

महान देश भक्त, गम्भीर चिन्तक, दार्शनिक, क्रांतिकारी देश विदेश में भारतीय स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले, तीस वर्ष तक देश निर्वासन जैसा जीवन बिताने वाले भूखे प्यासे रहकर कभी इंग्लैण्ड, कभी अमेरिका, कभी फ्राँस, जर्मनी, स्विटजरलैंड और कभी अफ्रीका तथा स्वीडन आदि देशों में भारतीय आजादी की धुन में धूल फाँकते रहे। केवल पचपन वर्ष की आयु में जब भारत में स्वतंत्रता की देवी द्वार पर दस्तक दे रही थी, तभी विदेश में जीवन की अंतिम घड़ी भारत के इस सपूत को अपने आगोश में समेट अचानक अनजाने लोक ले गई।

भारत के उसी लाडले लाल लाला हरदयाल के जीवन की कुछ घटनाएँ प्रस्तुत हैं। लाला हरदयाल का जन्म 14 अक्टूबर सन् 1884 को दिल्ली के चाँदनी चौक में पराठे वाली गली के पिछले भाग में स्थित चीरा खाने मौहल्ले में हुआ। इनके पिता का नाम गौरी दयाल तथा माता का नाम भौंरी रानी था।

लाला हरदयाल बचपन से ही अत्यन्त मेधावी तथा बुद्धिमान थे। इन्होंने मैट्रिक तथा बी.ए. की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। एम.ए. में गवर्नमैंट कॉलिज लाहौर से प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एम.ए.में पंजाब विश्वविद्यालय के इतिहास में कभी किसी ने इतने अंक इनसे पहले प्राप्त नहीं किए थे। इस कारण इन्हें भारत सरकार ने इंग्लैण्ड में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु तीन वर्षों के लिए स्कॉलरशिप प्रदान की।

इंग्लैण्ड जाने पर हरदयाल जी को सैन्ट जॉन्स कॉलिज (ऑक्सफोर्ड) में प्रवेश मिल गया। देशभक्ति के भाव तो लाला हरदयाल के मन में बचपन से ही विद्यमान थे। किन्तु इंग्लैण्ड में अंग्रेजों की स्वच्छन्दतावादी मनोवृत्ति देखकर उनके मन में राष्ट्र प्रेम और गहरा गया। इस भावना के कारण उनका मन विदेशी पढ़ाई के प्रति उपेक्षित सा हो गया। हितैषी मित्रों ने कहा– 'हरदयाल, तुम अत्यन्त मेधावी तथा कुशाग्रबुद्धि हो' आई.सी.एस. उतीर्ण करना तुम्हारे बाएँ हाथ का खेल है। उससे तुम्हें धन व यश दोनों की प्राप्ति होगी।' लाला हरदयाल ने कहा–नौकरी तथा धनार्जन में मेरी रुचि नहीं है, मैं तो अपनी प्रतिभा का उपयोग देश हित में करना चाहता हूँ।'

उन्हीं दिनों लाला हरदयाल की भेंट श्याम जी कृष्ण वर्मा से हुई। उन्होंने लन्दन में एक विशाल भवन खरीद कर उसका नाम 'इण्डिया हाउस' रखा। वहाँ अनेक भारतीय क्रान्तिकारी छात्र रहते थे। यहीं पर हरदयाल जी का परिचय वीर सावरकर जी से हुआ। दोनों में मैत्री हो गई क्योंकि दोनों का लक्ष्य एक ही था। भारत में लगभग इसी समय लाल, पाल, बाल की धूम थी। लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीत सिंह को देश निर्वासन का दण्ड दिया जा चुका था। तिलक जी से भी ब्रिटिश हकूमत खार खाए बैठी थी। उन्हें भी कुछ समय पश्चात् छः वर्षों का दण्ड देकर माण्डले (बर्मा)भेज दिया गया था। तिलक जी ने ही 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा।' का उद्घोष किया था।

इस अन्याय को देखकर लाला हरदयाल इतने व्यथित हुए कि उन्होंने सरकार द्वारा दी जाने वाली 'छात्रवृत्ति' छोड़ने का निश्चय कर लिया। जब इस बात का पता भाई परमानन्द जी को चला, जो उस समय लंदन में ही थे, और हरदयाल जी को लाहौर के समय से ही जानते थे, उन्होंन हरदयाल जी को समझाते हुए कहा– 'तुम्हारा विचार तो उत्तम है परन्तु भावुकतावश जल्दी में कोई कदम उठाने से पहले गंभीरता से सोच लो– तुम्हारी परीक्षाएँ निकट हैं, दूसरे आजीविका का प्रश्न है। तीसरे सरकार के सन्देह के घेरे में आ जाओगे।'

लाला हरदयाल ने भाई जी की बात अनसुनी कर लन्दन में भारत मंत्री के पास गए और अपने संकल्प की सूचना दे दी। इस निर्णय से भारत मंत्री को आश्चर्य हुआ। भारत मंत्री ने पूछा– 'तुम कहीं सरकार के विरोध में तो यह छात्रवृत्ति नहीं छोड़ रहे हो? 'ऐसा ही समझ लीजिए।' हरदयाल जी ने किंचित् आक्रोश से कहा। इस बात की सूचना जब श्याम जी को मिली तो उन्होंने लाला हरदयाल को लिखा–तुम्हारा देश–भक्तिपूर्ण निर्णय जानकार प्रसन्नता हुई। चिन्ता न करें मैं तीन वर्ष तक तुम्हें एक हजार रु. मासिक देता रहूँगा। पढ़ाई न छोड़ें।' श्याम जी का विचार था कि पढ़ाई पूरी करके देशसेवा और भी अच्छी हो सकती है। पर हरदयाल जी तो निर्णय ले चुके थे। उन्होंने प्रिंसिपल के पास जाकर भी कहा कि मेरा नाम रजिस्टर से काट दीजिए। प्रिंसिपल ने हरदयाल जी से कहा 'भले ही तुम सरकारी छात्रवृत्ति छोड़ दो–पर परीक्षा अवश्य दो, मैं तुम्हारा सारा खर्च वहन करूँगा। हरदयाल जी ने कहा 'मैं अपने देशवासी राष्ट्रभक्तों को धोखा नहीं दे सकता।' ऑक्सफोर्ड छोड़कर वे सावरकर जी के साथ स्वतंत्रता की योजना में समय व्यतीत करने लगे।

सन् 1908 में लाला हादयाल भारत आए। सबसे पहले वे पूना में तिलक जी से मिले और कहा– 'श्रीमान्! मैं भारत के नवयुवकों में देशभक्ति की भावना भरना चाहता हूँ–परन्तु इसके लिए मेरे पास कोई ठोस योजना नहीं हैं अतः आपका मार्ग दर्शन चाहता हूँ। तिलक जी ने कहा–'आपका निर्णय स्वागत योग्य है। आप उत्तर भारत में आश्रम बनाकर युवकों को संगठित और प्रेरित करें।' लाला लाजपतराय के निमंत्रण पर लाला हरदयाल लाहौर पहुँचे और योजनानुसार नवयुवकों को प्रेरित एवं शिक्षित करने लगे।

उस समय भारत में राजनीतिक उथल–पुथल मची हुई थी। सरकार को जनता की एकता और मेल मिलाप खटकता था। हिन्दू–मुस्लिम एकता में दरार डालने के लिए लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करने की चाल चली जो बंग–भंग आन्दोलन के रूप में उभरकर सामने आई। इसी वर्ष मुजफ्फरपुर में किंग्सफर्ड की हत्या की कोशिश में दो बंगाली किशोरों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। प्रफुल्ल चाकी (16 वर्ष) तथा खुदीराम बोस (15 वर्ष) इसमें शामिल थे। चाकी ने तो मौके पर ही स्वयं को गोली मार ली, खुदीराम गिरफ्तार करके फाँसी पर लटका दिया गया। इनकी शहादत से सारा देश सिहर उठा। पंजाब में लाला हरदयाल....जब नवयुवकों में राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत कर रहे थे, तभी एक विश्ववस्त सूचना के आधार पर लाला लाजपतराय ने हरदयाल जी से कहा, सरकार आपको बन्दी बनाकर दण्डित करना चाहती है इसलिए आप शीघ्र भारत छोड़कर किसी तटस्थ देश में चले जाएँ। परन्तु लाला हरदयाल बाहर न जाने पर अड़ गए। ला. लाजपतराय के काफी समझाने पर वे देश छोड़ने के लिए सहमत हुए।

लाला हरदयाल समुद्री मार्ग से फ्राँस की राजधानी पेरिस पहुँचे। वहाँ श्याम जी से भेंट कर लंदन जाकर इण्डिया हाउस में सावरकर जी से मिले। वहाँ सावरकर जी एक सरकारी अधिकारी कर्जन वायली के कारनामों से परेशानी थे जो भारतीय क्रान्तिकारियों को अन्यायपूर्ण तरीकों से दण्डित कराने में लगा रहता था। सावरकर जी उसे सबक सिखाना चाहते थे। उन्हीं दिनों मदन लाल ढींगरा नामक एक भारतीय युवक ने सावरकर जी की इच्छा जानकर कहा– 'वायली से मेरे पिता का अच्छा परिचय है, वह मुझे भी जानता है, आप निश्चिन्त रहें मौका मिलते ही मैं इस काम को ठीक से अंजाम दे सकूँगा।' मदन लाल ढींगरा अमृतसर के एक धनाढ्य व्यक्ति का पुत्र था तभी कर्जन वायली के घर एक पार्टी थी। ढींगरा भी वहाँ पहुँचा पार्टी में सम्मिलित लोग खा पीकर मस्ती में झूम रहे थे। तभी मदन लाल ने पिस्तौल निकाल कर वायली के सीने में दो गोलियाँ दाग दी। वह वहीं ढेर हो गया। ढींगरा को बन्दी बना लिया। मुकदमा चला और उसे फाँसी की सजा दे दी गई।

उसी समय मैडम भी का जी कामा ने पेरिस में भारतीय क्रान्तिकारियों का एक दल संगठित किया। उसके प्रचार के लिए एक पत्र 'वन्देमातरम्' निकालने की योजना बनाई। परन्तु सम्पादन की समस्या थी। सोच विचार के पश्चात् उनकी दृष्टि ला. हरदयाल पर गई। उधर लंदन में भारतीय देश भक्तों के दमन के कारण काम करना कठिन हो रहा था, लिहाजा मैडम का प्रस्ताव मिलते ही हरदयाल जी ने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया।

लाला हरदयाल के सम्पादकत्व में पत्र तेजी से चल निकला। इसकी लोकप्रियता में आशातीत वृद्धि हुई। इसी बीच लाला हरदयाल ने फ्रैन्च भाषा में लिखने–पढ़ने तथा बोलने का पर्याप्त अभ्यास कर लिया। 'वन्देमातरम्' के उत्तेजनात्मक लेखों के कारण ब्रिटिश गुप्तचर उनके पीछे लग गए। कार्याधिक्य के कारण ला. जी अस्वस्थ हो गए। डाक्टरों की सलाह पर वे स्विट्जरलैण्ड चले गए। वहाँ स्वास्थ्यलाभ के साथ–साथ स्विस भाषा का भी अभ्यास करते रहे। कुछ ठीक हुए तो फिर पेरिस आ गए।

अंग्रेज जासूस बराबर हरदयाल जी का पीछा कर रहे थे, इसलिए वे कुछ दिन के लिए वैस्टइंडीज के 'लामार्ती लीक टापू' पर विश्राम हेतु चले गए। वहाँ नीचे सोते थे। हरी कच्ची सब्जी और आलू उबालकर खाते थे और अध्ययन करते थे। करीब तीन–चार महीने बाद वहाँ से वे सनफ्राँसिस्को चले गए। लगभग 6 महीने 'लेलैण्ड स्टेफर्ड विश्वविद्यालय' में हिन्दू दर्शन तथा सस्कृत का अध्यापन किया। वे कॉलिजों तथा विश्वविद्यालयों में जाकर भारत में अंग्रजों के अत्याचारों की पोल खोलते थे। यहाँ तैनात गुप्तचरों ने इनके कार्यों की रिपोर्ट भारत सरकार को भेजी। उसमें लिखा– 'लाला हरदयाल यहाँ छात्रों को भाषण देते हैं पर उनका मुख्य उद्देश्य भारतीय क्रान्ति की सूचना देकर उन्हें उत्तेजित करना है। अब तक जितने आंदालनकारी इस देश में आए हैं, उनमें हरदयाल सबसे खतरनाक क्रान्तिकारी है।

तभी सनफ्राँसिस्को में कुछ भारतीय छात्रों ने 'नालन्दा–क्लब ' की स्थापना कर मार्ग दर्शन के लिए लाला हरदयाल को आमंत्रित किया, वे आए और उन्होंने प्रभावशाली ढंग से छात्रों को प्रेरित किया। इस सम्मेलन से दो लाभ हुए, एक लाला हरदयाल के प्रति लोगों में स्नेह–सम्मान की वृद्धि हुई, दूसरे इस क्षेत्र में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को प्रत्यक्षतः बल भी मिला।

–24/4 विशन स्वरूप कालोनी
पानीपत–132103

शेष अगले अंक में

www.thearyasamaj.org



# आर्य समाज और वेद प्रचार

● डॉ. महेश विद्यालंकार

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' ऐसा क्रांतिकारी उद्‌घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं, कोई भी वेदों के प्रति ऐसी मान्यता व धारणा नहीं रखते हैं। ऋषि की महत्त्वपूर्ण विशेषता व देन है वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो। वेदज्ञान ही आज के भूले, भटके, अशांति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि में लिप्त मानव समाज को सच्चे सुख, शान्ति, प्रसन्नता, नीरोगता, विश्वशान्ति, विश्वबधुत्व और विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान सार्वभौमिक सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेदज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवित–जागृत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों, कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्यसमाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरूष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि स्वयं में सिद्धांत व विचार थे। वेद प्रचार आर्यसमाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिला है। आर्यो! ऋषि का अमर संदेश गूँज रहा है। वेद–वेद–वेद प्रचार करो, वेदानुकूल जीवन जीओ, वेदज्ञान जन–जन तक पहुँचाओ। जितना वेद ज्ञान का प्रचार–प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढोंग, पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन–दर्शन जगत को सीधा सच्चा, एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास ढोंग, पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म, भक्ति और परमात्मा बाजार–व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है। उसमें आर्य समाज प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभा सकता है। कभी आर्य समाज जागते रहो, जागते रहो की भूमिका में था। आर्य समाज का अतीत अत्यंत प्रेरक–उज्ज्वल, अनुकरणीय, स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व–गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यंत चिन्तनीय व विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। कहाँ के लिए चले थे? कहाँ जा रहे हैं। जो पहले हमारी साख, विश्वसनीयता पहचान, सम्मान व आकर्षण था, उसमें तेजी से गिरावट आ रही है। हमारे अनुयायी तेजी से कम हो रहे हैं। दैनिक, साप्ताहिक वार्षिकोत्सवों, यज्ञ कथा आदि में उपस्थिति चिन्तनीय हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्ता, सदस्य अधिकारी आदि जा रहे हैं। उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ पा रहे हैं। पहले भवन कच्चे होते थे, लोग विचारों, सिद्धांतों, आदर्शों और आचरण से पक्के होते थे। आज उल्टा हो रहा है। भवन पक्के बन रहे हैं। लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेजी से आर्यसमाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं, संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। बाहर का कलेवर लम्बा चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गंभीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई, संघर्ष , विवाद, अज्ञान, अशिक्षा, ढोंग, पाखण्ड आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थी। वह आपस में ही लड़ पड़े। आर्यसमाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष हैं। इसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी ही रही है। ये बातें जीवन को सँभालती व सन्तुलित रखती हैं। संध्या व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है। भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपासना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग व कार्यक्रमों में सात्विकता, धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरकप्रभाव आदि होना चाहिए, उसका तेजी से अभाव हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्यसमाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था। आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरुरत है। आर्यसमाज की भ्रष्ट, स्वार्थ, पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्यविचारधाराप्रेमी, और समाज हितैषी लोग अन्दर से दुःखी, बेचैन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उस तक पहुँचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्यसमाज के पास मौलिक, अद्वितीय सम्पदावैचारिक–चिन्तन और मान्यताएँ हैं। आज भी आर्यसमाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। आज संसार सुविचारों के अभाव में जीवन व जगत को नर्क बनाकर जी रहा है। आर्यसमाज का जो जीवन दर्शन है। वह हमें इहलोक और परमार्थ की सुखद–विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्वनिर्माण इसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्यसमाज जनता से कट व हट रहा है। आज युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार का है। दुर्भाग्य है कि आज तक आर्यसमाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है जबकि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रूपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। इतने में रचनात्मक, प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है। जोकि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवनमूल्य, सत्यज्ञान और संस्कृत–संस्कृति बोध नहीं है वे मीडिया, चैनलों, सार्वजनिक मंचों पर छा रहे हैं। आर्य समाज के पास वेदज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक, सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग का सत्यस्वरूप आदि हैं। इनके द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा और ऋषि को, आम आदमी व युवापीढ़ी तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरित मानस और हनुमान चालीसा को घर–घर तक पहुँचा दिया। सभी पढ़ व सुन रहे हैं। आर्यसमाज वेदों को सरल भाव में घर–घर तक नहीं पहुँचा सका है। इस विषय पर गंभीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। 'वेद की ज्योति जलती रहे,' नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों संयासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएँ हैं जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवा पीढ़ी भटकन अन्धविश्वास व अज्ञान में फँस रही है। वह सत्य व शांति चाहती है। वह ढोंग पाखण्ड, आडम्बर, गुरु महन्तों सन्तों आदि से तंग हो रही है। आर्यसमाज के पास सद्‌ज्ञान, विचार, प्रेरणा व जीवनदर्शन है। किंतु, परंतु, लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता। युवापीढ़ी भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्यसमाज को अपने स्वरूप को सँभालने तथा पुनर्मूल्यांकन की जरुरत है। वर्तमान जीवन जगत को ज्वलंत समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन–दर्शन में है। अतः आर्यो उठो, जागो, सोचो, विचारो, करो। यह समय विवादों का नहीं संवादों का है। चिन्ता नहीं चिंतन करो। जिन उद्देश्यों आदर्शों व सिद्धांतों के लिए ऋषिवर ने आर्यसमाज बनाया था। उन्हें समझो, पकड़ो और आगे बढ़ाओ। यही वेदप्रचार है।

शालीमार बाग दिल्ली

☞ *पृष्ठ 5 का शेष*

# गुरु विरजानंद का संक्षिप्त...

महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का भी संग्रह किया गया था। **कुरानशरीफ** की एक पुस्तक पर पचास हजार (50,000) रुपए व्यय हुए थे। **गुलिस्तां** दो लाख रुपए में लिखवाई गई थी।

**दण्डी जी का निवास**– दण्डी जी **कटरा** में **जगन्नाथ मन्दिर** के निकट एक बहुत बड़े भवन में रहने लगे। भोजन सामग्री राज भण्डार से आती थी। **मित्रसेन** नामक ब्राह्मण पाचक नियुक्त किया गया। वस्त्र–परिधान का राजा स्वयं ध्यान रखते थे। स्वेच्छानुसार व्यय हेतु प्रतिदिन एक रुपया राज्य की ओर से निश्चित किया गया।

अलवर–नरेश के पढ़ने का समय व स्थान निश्चित हो गया और दण्डी जी निश्चित समय पर राजकीय सवारी में राजमहल जाकर पढ़ाने लगे। दण्डी जी ने उन्हें **वरदराजकृत लघुसिद्धांत–कौमुदी** पढ़ानी प्रारम्भ की। एक दिन राजा ने प्रार्थना की कि कोई ऐसा उपाय किया जाए कि थोड़े समय में व्याकरण का अधिक ज्ञान हो जाए। तब दण्डी जी ने राजा की इच्छा–अनुरूप एक नया ग्रंथ **शब्दबोध** बनाकर पढ़ाया।

**अच्छे वक्ता की पहिचान**– दण्डी जी अध्यापन कला में प्रवीण थे। वे प्रायः कहा करते थे कि **वक्तुः एवतु तत् जाड्यम् यत्र श्रोता न बुध्यते। अर्थात्** यदि वक्ता श्रोता को अपना अभिप्राय हृदयंगम न करा सके तो यह वक्ता की जड़ता (कमी, सुस्ती) है।

अलवर में दण्डी जी के तीन शिष्य थे– 1–

*शेष पृष्ठ 9 पर* ☞

www.thearyasamaj.org



# चीखें

● राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज इस देश में धर्म का व्यापार, ज्योतिष का व्यापार, देह का व्यापार, खून का व्यापार तथा मानव अंगो की तस्करी का व्यापार तो न सिर्फ धड़ल्ले से चल रहा है बल्कि चरमोत्कर्ष पर है। इन्हीं सब व्यापारों में एक नाम और जुड़ गया है, और वह है बच्चों का व्यापार। बच्चों का व्यापार तो बाकी सभी व्यापारो से भी घृणित, घातक है, क्योंकि इसके द्वारा बच्चों का सम्पूर्ण जीवन एवं भविष्य–कैद हो जाता है– किन्ही क्रूर हाथों में। बच्चे अपने हर माँ बाप के आँखों के तारे होते हैं। जिसकी एक किलकारी से माँ बाप अपने सभी दुःख दर्द भूलकर थोड़ी देर के लिए आत्मविभोर हो जाते हैं। मनुष्य, पशु–पक्षियों में भी अपार स्नेह होता है। अपने बच्चे के लिए। गाय और भैंस तो बच्चे जनने के बाद बहुत देर तक उसे चाटती रहती हैं। बंदरिया तो अपने मरे हुए बच्चे को भी सीने से चिपकाकर कुछ दिन भाग–दौड़ करती है। चिड़िया तो अपने नवजात बच्चे की चोंच में अपनी चोंच से दाना डालकर बहुत दिनों तक उसकी परवरिश करती है। पर आज इन्हीं इन्हें–मुन्ने बच्चों को चुराकर बहुत बड़े पैमाने पर इसका व्यापार किया जा रहा है।

सभी रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, मेला क्षेत्र इत्यादि जगहों पर इन बच्चाचोर गिरोहों के सदस्य पूरी तरह सक्रिय रहते हैं, इनका नेटवर्क पुरा देश भर में फैला हुआ है। गलियों में पार्को में खेल रहे बच्चे एवं स्कूल आने–जाने के रास्तों पर इनकी पैनी नजर अपने शिकार पर लगी रहती है। बस ज़रा सी अभिभावको की नज़र ओझल हुई कि बच्चा गायब। जिस दिन से बच्चा गायब कर दिया जाता है, उसी दिन से खत्म हो जाता है इनका रूठना, इठलाना और माँ बाप के द्वारा इन पर उड़ेला जाने वाली प्यार, दुलार और मनाने का सिलसिला। शुरु हो जाता है जानवरों की तरह क्रूर व्यवहार ये खुद ही रोते हैं और रोते–रोते खुद ही चुप हो जाते है।

वे अभागे माँ–बाप जिनके बच्चे मर जाते है, वे भी कुछ दिनों तक विलाप करने के बाद धीरे धीरे सामान्य हो जाते हैं, पर वे अभागे माँ–बाप जिनके बच्चे गायब कर दिए जाते हैं, जीवन भर तड़पते रहते है उसकी एक झलक पाने को वे हमेशा लालायित रहते है, उन्हें याद कर बरबस ही उनकी आँखों से आँसू छलक जाते है जो स्वतः सूख जाते हैं उन्हीं की आँखों में ही।

आखिर कौन हैं इन बिलखते बच्चों के आसुँओं के असली मुजरिम? क्या सिर्फ वे ही जो इसे अंजाम देते हैं, नहीं सिर्फ वही नहीं, हम सभी हैं, पूरा देश है। यहाँ की पुलिस व्यवस्था, यहाँ की न्यायिक व्यवस्था और यहाँ की सरकार भी क्यों कि सरकार अगर संवेदनशील होती तो इस प्रकार की सिर्फ 1–2 घटना ही काफी है उसे झकझोर देने के लिए। कहने को तो सरकार ने इसके लिए अलग से मंत्रालय खोल रखा है, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय लेकिन सब निष्प्रभावी है। पुलिस निष्क्रिय है और न्यायालय असहाय क्योंकि अधिकांश बच्चे के माँ बाप निर्धन ही होते हैं। जो यहाँ तक पहुँच ही नही पाते और थाने में आसानी से F.I.R भी दर्ज नही होती।

आखिर इन लापता किए गए बच्चों को कहाँ और किस–किस रूप में खपाया जाता है ज़रा वो देखिए कि कितना दर्दनाक है। मानवता आज सिसक ही नहीं बल्कि दम तोड़ रही है और हम हैं कि अपनी उपलब्धियों पर थिरक रहे है।

1. इन लापता किए गए बच्चों को लोग खरीद लेते हैं और कुछ दिन पालने के बाद इनसे जीवनभर मजदूरी करवाते हैं। यही नहीं इनसे घातक उद्योगों में काम भी करवाते है, जैसे भट्ठी वाले उद्योग, पटाखे और रासायनिक हथियार बनाने वाले कारखाने में भी। अपने बच्चे को तो ये दुनियाँ की तमाम खुशियाँ देना चाहते है पर दूसरे बच्चे की तमाम खुशियाँ छीन लेते हैं।

2. चोरी और पाकेटमारी करने वाले लोग भी इन्हें खरीदकर कुछ आवश्यक ट्रेनिंग के बाद इनसे चोरी और पाकेटमारी करवाते है अगर पकड़े गए तो इसकी सजा उन्हें भुगतनी पड़ती है उन्हें तो उसकी आमदनी से मतलब होता है।

3. कुछ ऐसे भी गिरोह हैं जा बच्चों से भीख मँगवाते हैं। ये लोग उसे लँगड़ा लूला और अंधा बनाकर अपाहिज कर देते हैं ताकि दयावश लोग इन्हें अधिक भीख दे सकें।

4. कुछ रईस लोग इन्हें खरीद लेते हैं और इनसे घरेलु नौकर का काम लेते है। ये अक्सर इनका यौन शोषण भी करते हैं इन्हीं सब के लिए इनका विदेशो में निर्यात भी किया जाता है।

5. लड़कियों की कहानी तो और भी दर्दनाक है। इन्हें चुराकर जिस्म फ़रोशी की मंडियों में बेच दिया जाता है जहाँ कोई कोठे की संचालिका नकली माँ मौसी बनकर इनकी परवरिश करती है और 10 वर्ष की उम्र होते होते इन्हें देह व्यपार के दलदल में उतार दिया जाता है जहाँ जीवनभर इन्हें यही करना होता है। बाल वेश्या की तो अधिक माँगें हैं। जिनमें इनकी मालकिन को अधिक आमदनी होती है। आज इस देश के हर बड़े शहर में इन लाखों चुराकर लाई गईं लड़कियो से वेश्यामंडी जगमगा रही हैं। आज अगर सच्चाई से सर्वे किया जाए तो बहुत ही कम लड़कियाँ ऐसी मिलेगी जो स्वेच्छा से इस काम को कर रही हैं अधिकांश लड़कियाँ बलपुर्वक इस जिस्म फ़रोशी के धंधे में धकेली गई है। अगर कुछ वर्षों के बाद खोई लड़की मिल भी जाए तो उसकी पहचान मुश्किल है। इसी से संबधित एक दिल दहला देने वाली घटना हमने सुनी है जो इस प्रकार है–

एक बार वेश्यागमन के उद्देश्य से एक व्यक्ति एक वेश्यालय में पहुँच गया संचालिका से मोल–भाव तय होने के बाद उसे एक लड़की परोसी गई। लड़की के साथ संभोगरत होने के बाद उस व्यक्ति के बहुत कुरेदने पर लड़की उसे अपनी आप बीती सुनाने को तैयार हुई। चूँकि गायब किए जाने के समय लड़की कुछ वयस्क थी इसलिए उसे सब कुछ ठीक–ठाक याद था। लड़की ने उस व्यक्ति को अपना नाम पता पिता का नाम तथा परिवार के सभी सदस्यों का हुलिया सब ठीक–ठाक बता दिया। उसने उसे यह भी बताया कि कैसे उसे इसके लिए तैयार नहीं होने पर कई–कई दिनो तक भूखे रखकर भयंकर यातना दी गई। जिससे अन्ततः वह टूट गई और तभी से वह यह घिनौना काम कर रही है। लड़की से इतना सब सुनने के बाद वह व्यक्ति रोने लगा रोते–रोते लड़की को बताया की वह खुद ही है उस लड़की का अभागा बाप, जिसे आज से 10 वर्ष पूर्व किसी ने मेले से गायब कर दिया था। उस व्यक्ति को रोते देखकर लड़की से भी नहीं रहा गया और वह भी फ़फक–फ़फक कर रोने लगी। पिता पुत्री का मिलन भी हुआ तो इस प्रकार। उस व्यक्ति ने लड़की को अपने घर ले जाने को बहुत ज़िद की पर लड़की उसके लिए राजी नहीं हुई और बोली कि अब बहुत देर हो चुकी हैं। अब तो यही जिन्दगी उसकी नियति बन चुकी है। वह व्यक्ति निराश होकर लौट गया और अपने घर जाकर कुछ बात छिपाकर उसने परिवार को बेटी के मिलने की बात बता दी, उसने परिवार को यह भी बताया कि अब वह नाच गान कर रही है। लेकिन अपने परिवार वालों के अत्यधिक ज़ोर देने पर वह कुछ आदमियो को साथ ले उसी कोठे पर जा पहुँचा। उसे वहाँ पहुँचकर उसे मालूम हुआ कि लड़की तो उसके दूसरे ही दिन, जब पहली बार वह यहाँ आया था, जहर खाकर मर गई। दरअसल अपने जन्मदाता पिता, जिसकी गोद मे उसका बचपन बीता था, उसी के साथ संभोगरत होने की ग्लानि को वह बर्दाश्त नहीं कर पाई और जहर खाकर हमेशा के लिए इस घिनौने काम से छुटकारा पा लिया।

बड़े होने पर तो बच्चों को सुख–दुख भोगना तो अलग बात है। पर समाज को इन बिलखते बच्चों के आँसुओं पर तो गम्भीर होना ही पड़ेगा। हम तब तक इस विषय पर गम्भीर नहीं हो सकते जब तक यह सिर्फ दूसरों के साथ घटित हो रहा है अपने साथ नहीं। असल में हम जानवरों की चीखें सुनते–सुनते इतने बहरे हो चुके हैं कि अब हमें बच्चों की चीखें भी सुनाई नहीं पड़तीं। आज अपहृत बच्चे अपने दोनों छोटे हाथ उठाकर हम सभी से उसका बचपन बचा लेने की गुहार लगा रहे है। कृपया उन्हें बचा लें।

आर्य समाज, मुज.
मोबाइल– 9835206688

**आज इस देश में धर्म का व्यापार, ज्योतिष का व्यापार, देह का व्यापार, खून का व्यापार तथा मानव अंगो की तस्करी का व्यापार तो न सिर्फ धड़ल्ले से चल रहा है बल्कि चरमोत्कर्ष पर है। इन्हीं सब व्यापारों में एक नाम और जुड़ गया है, और वह है बच्चों का व्यापार। बच्चों का व्यापार तो बाकी सभी व्यापारो से भी घृणित, घातक है, क्योंकि इसके द्वारा बच्चों का सम्पूर्ण जीवन एवं भविष्य–कैद हो जाता है– किन्ही क्रूर हाथों में। बच्चे अपने हर माँ बाप के आँखों के तारे होते हैं। जिसकी एक किलकारी से माँ बाप अपने सभी दुःख दर्द भूलकर थोड़ी देर के लिए आत्मविभोर हो जाते हैं। मनुष्य, पशु–पक्षियों में भी अपार स्नेह होता है। अपने बच्चे के लिए। गाय और भैंस तो बच्चे जनने के बाद बहुत देर तक उसे चाटती रहती हैं। बंदरिया तो अपने मरे हुए बच्चे को भी सीने से चिपकाकर कुछ दिन भाग–दौड़ करती है। चिड़िया तो अपने नवजात बच्चे की चोंच में अपनी चोंच से दाना डालकर बहुत दिनों तक उसकी परवरिश करती है। पर आज इन्हीं इन्हें–मुन्ने बच्चों को चुराकर बहुत बड़े पैमाने पर इसका व्यापार किया जा रहा है।**

www.thearyasamaj.org



# अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

● अर्जुनदेव चढ्डा

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी–कभी ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहाँ 2012 में भीलवाड़ा से इलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिवार परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहाँ कुछ टोने–टोटके करने लगा। लोगों ने पूछा तो उन्होनें बताया कि उनको किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियाँ चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेक घटनाएँ, तथ्य, विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्को से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अँधेरे में फँसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाए जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी आदमी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोने–टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएँ, गंडे ताबीज, भूत–प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन–किन रूप में लोगों के मन में घर किए हुए है।

कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मंत्र से फोड़कर दिखना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना, रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना, बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नजर आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल–फूल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं। और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारिरिक, मानसिक यंत्रणा। जिन शारीरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तंत्र–मंत्र के इस मार्ग को चुनते हैं, अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हूए लुटे–पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं। कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविशवासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत–प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहाँ तक कि अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद, दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इन का कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किंतु इन ग्रन्थों के ज्ञान से अंजान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नए पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था के अनुरूप नए शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैठ जमा लेते हैं। और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैंगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकते हुए दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सुंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकारी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तंत्र–मंत्र, जादू टोने–टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियाँ छुपी हुई हैं, न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख–तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करे। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र–मंत्र के नाम पर भोले–भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करें। क्योंकी वेद कहते हैं ''अंधन्तम प्रतिशन्ति ये अविद्याम् उपासते'' जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न कि तंत्र–मंत्र तथा पाखण्ड से।

स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराव भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढोंगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने तब और अब इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी समय कोटा कलेक्टर को फोन कर ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने देने का आग्रह किया।

व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आम जन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन–प्रशासन–पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया।

**प–28, विज्ञाननगर, कोटा**
**324005**
**(राज;) मो.: 09414187428**

☞ *पृष्ठ 7 का शेष*

# गुरु विरजानंद का संक्षिप्त...

**अलवर नरेश 2–अंगदराम 3– प्रेमसुख।** ये तीनों नित्य उन से पढ़ते थे।

अलवर निवास में रहते हुए लगभग 3–4 वर्षो तक दण्डी जी ने विनय सिंह को नियमपूर्वक **शब्दबोध, लघु कौमुदी, विदुरप्रजागार, तर्क–संग्रह, रघुवंश आदि** पढ़ाए। विनय सिंह दण्डी जी को दिए गए वचन का भी ध्यान रखते थे। अतः वे नियमपूर्वक एक सामान्य विद्यार्थी की तरह श्रद्धापूर्वक अध्ययन करते रहे।

**वचन भंग होने पर अलवर त्याग का निश्चय–** एक दिन दण्डी जी निश्चित समय पर पढ़ाने गए तो राजा अनुपस्थित थे। न कोई पूर्व अनुमति, न कोई पूर्व सूचना थी। कहते हैं कि उस दिन राजा किसी नाच–तमाशा देखने में लीन थे। यह भी कहा जाता है कि वे किसी आवश्यक राज कार्य में व्यस्त थे। कुछ भी कारण रहा हो परन्तु वचन तो भंग हो ही गया। दण्डी जी ने बहुत देर तक प्रतिक्षा की, फिर क्षुब्ध होकर महल से चल पड़े तथा अलवर त्यागने का निश्चय कर लिया।

विनय सिंह भी स्व–वचन भंग से दुःखी हुए तथा स्वयं दण्डी जी के स्थान पर उपस्थित होकर अनुनय–विनय की परन्तु सब व्यर्थ। दण्डी जी ने स्पष्ट कह दिया, ''राजन्! आप तो अपनी प्रतिज्ञा भंग कर सकते हैं पर मैं नहीं कर सकता। वचन भंग होने पर न तो मुझे रुकना चाहिए और न आप को रुकने के लिए कहना चाहिए। हाँ, आप के स्नेह के कारण आज नहीं जाऊँगा।'' दण्डी जी ने सेवक से फल मँगवाकर **फलेन फलितं सर्वम्** आदि कहकर राजा को देकर शुभ आशीर्वाद दिया और राजा ने भी तत्काल 2500 रु० की स्वर्णमुद्रा मँगवा कर श्रीचरणों में भेंट की।

अगले दिन प्रातः कुछ पुस्तकें तथा 2500 रु० मार्ग व्यय हेतु लेकर दण्डी जी अंगदराम के साथ **भरतपुर** के लिए चल पड़े। **शब्दबोध** सहित कई अनमोल पुस्तकें और कुछ धन वहीं छोड़ गए।

**भरतपुर वास–** दण्डी जी अपने शिष्य अंगदराम के साथ कुम्हेर होते हुए **1835 ई० के** आस–पास भरतपुर पहुँचे। दण्डी जी के विद्याबल एवं वैराग्य से अत्यधिक प्रभावित राजा **बलवंत सिंह** ने उन की बहुत सेवा की और स्थाई रूप से भरतपुर ठहरने का अनुरोध किया। परन्तु दण्डी जी केवल **6 मास** ठहरे। राजा ने विदाई

*शेष पृष्ठ 11 पर* ☞

www.thearyasamaj.org



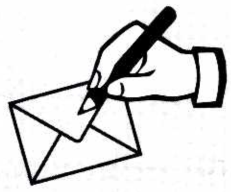

# पत्र/कविता

## ओ३म् जप बन्दे, सिखाया था ऋषी ने

ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।
ज्ञान का दीपक जलाया था ऋषी ने।।
अंधविश्वासों का डेरा,
सो रहा था देश मेरा,
या नहीं दिखता सवेरा,
दूर तक फैला अंधेरा,
वेद–सूरज से भगाया था ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।।

दुर्गुणों ने देश घेरा,
मत–मतान्तर का बसेरा,
वेद–विद्या लुप्त–सी थी,
सत्य कोहरे में घनेरा,
चीर कोहरा सत्य दिखलाया था ऋषी ने।
ओ३म् जय बन्दे सिखाया था ऋषी ने।।

दुर्दशा थी नारियों की,
वेद पढ़ने की मनाही,
जाति–बंधन की वजह से,
हिन्दुओं की थी तबाही,
गुण–करम से जाति, बतलाया ऋषी ने।
ओ३म् जप बन्दे सिखाया था ऋषी ने।।

यज्ञ–संस्कृति से जुड़ो तुम,
भोग लिप्सा से हटो तुम,
स्वप्न अपने राज्य का हो,
वेद–मंत्रों को पढ़ो तुम,
सत्यविद्या वेद में यह तथ्य समझाया ऋषी ने।
ओ३म् जय बन्दे सिखाया था ऋषी ने ।।

**(शुद्ध वर्तनी 'ऋषि' है, किन्तु यहाँ छन्द के आग्रह से सर्वत्र 'ऋषी' का प्रयोग किया गया है।)**

**प्रो. सुन्दर लाल कथूरिया, डी.लिट्.**
**बी–3/79, जनकपुरी नई दिल्ली–110 058**

## मुस्लिमों ने देवनागरी लिपि को अपना लिया है किन्तु--

उर्दू अरबी लिपि दाएं से बाईं ओर लिखी जाती है। 1947 में जिन्ना ने कहा था कि पाकिस्तान बनवाने का श्रेय उर्दू को है। पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा उर्दू है। उर्दू के कारण भारत 1947 में विभाजित हुआ और इसी उर्दू के कारण पूर्वी पाकिस्तान अलग होकर बंगला देश के नाम से नया राष्ट्र 1971 में बना। इस प्रकार उर्दू ने 24 वर्षों में दो देशों को विभाजित किया।

खंडित भारत के स्वार्थी नेताओं का उर्दू से लगाव कम नहीं हुआ। संविधान की 8वीं अनुसूची में उर्दू का 15 वाँ स्थान है। जम्मू–कश्मीर की सरकार कश्मीरी की जगह उर्दू को बढ़ावा दे रही है। बिहार–झारखण्ड तथा उत्तर प्रदेश में इसे द्वितीय राज भाषा का दर्जा दिया जा चुका है।

दूरदर्शन पर हिन्दी प्रदेशों के मुस्लिम नेता शुद्ध हिन्दी में बोलते हुए देखे जाते हैं। मुस्लिम बच्चे शुद्ध हिन्दी बोलते हैं। मुस्लिम घरों में प्रायः हिन्दी के ही अखबार पढ़े जाते हैं। इससे लगता है कि मुस्लिमों ने हिन्दी और देवनागरी लिपी को अपना लिया है किन्तु हिन्दी नेता अपने स्वार्थ के कारण इन्हें जबर्दस्ती उर्दू भाषी मानते हैं और उर्दू को बढ़ावा देने की तरह 2 की घोषणाएँ करते रहते हैं।

खेद का विषय है कि अब 9 नवम्बर को उर्दू दिवस भी मनाया जाने लगा है। मुलायम सिंह ने रामपुर में ,मायावती ने लखनऊ मे उर्दू विश्वविद्यालय बनवा कर उसे और बढ़ावा दिया है। निन्दनीय कार्य किए है।

उर्दू भाषा के विकसित होने से मुस्लिमों में अलग पहचान की भावना बढ़ेगी और वे मुख्य धारा से दूर होंगे। ईश्वर हिन्दुओं को सद्बुद्धि दे।

**इन्द्र देव**
**18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर**

**********

## डी.ए.वी. संस्थायें हैं नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा के केन्द्र

आर्य समाज एक क्रांतिकारी आन्दोलन है यह कोई नया पंथ अथवा मत नहीं है। इस की स्थापना अप्रैल 1875 में सर्व प्रथम मुम्बई महानगर में हुई थी अब इसका विस्तार देश देशान्तर और दीप द्वीपान्तर तक हो चुका है। इसका मुख्य लक्ष्य संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना तथा वेद के आदेश 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के अनुसार संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना है।

आर्य समाज के आठवें नियम में अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करना कहा गया है। इसलिये महर्षि दयानन्द के बलिदान के पश्चात् आर्य समाज के नेताओं हंसराज, लाजपत राय और गुरुदत्त इत्यादि ने उनके नाम पर लाहौर में एक कालेज खोलने की योजना बनाई। हंसराज जी ने अपना जीवन इसी के अर्पण कर दिया। धीरे–धीरे अन्य नगरों में भी डी.ए.वी. के नाम से स्कूल तथा कालेज कमेटी आरमी करने लगी। इस समय डी.ए.वी. के तत्त्वावधान में जालन्धर में एक विश्वविद्यालय तथा देश भर के अनेक नगरों में 800 के लगभग शिक्षण सस्थायें चलाई जा रही हैं। इन सस्थाओं में यह विशेषता है कि इन में विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा तथा धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है ताकि वह पढ़ लिख कर अच्छे नागरिक बनें जिसके लिये अलग से अध्यापक रखे हुये हैं। देश में स्वतंन्त्रता के बाद कई अन्य प्राईवेट सस्थाओं ने भी स्कूल कालेज खोले हुये है परन्तु उनमें विद्याथियों को नैतिक शिक्षा देने का कोई प्रावधान नहीं है।

**अश्विनी कुमार पाठक**
**केशव पुरम् दिल्ली**

**********

www.thearyasamaj.org



# विज्ञान वर्ग में डी.ए.वी. देहरा विजेता

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मझीण में 'बाल विज्ञान सम्मेलन' का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 15 विद्यालयों ने विज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डी.ए.वी. देहरा ने विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लेकर प्रथम स्थान ग्रहण किया। वरिष्ठ वर्ग में विज्ञान प्रश्नोत्तरी में प्रफुल शर्मा व आयुष ठाकुर एवं विज्ञान क्रियाकलाप में निखलेश ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मॉडल प्रतियोगिता में अनिरुद्ध राणा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इस विशिष्ट उपलब्धि पर प्रधानाचार्य श्री जी.के. भटनागर जी ने छात्रों व उनके अभिभावकों को हार्दिक बधाई दी एवं भविष्य में ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया

# डी.ए.वी., वेलचेरी, चेन्नई ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय तटीय सफाई दिवस

भारतीय समुद्र तट रक्षक (पूर्व) ट्री फाउंडेशन' और लॉयला ने अंतर्राष्ट्रीय समुद्र तटीय सफाई अभियान दिवस मनाया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समुद्र तट की स्वच्छता एवं जलीय जैव की सुरक्षा करना था। ट्राई बॉडी के छठवें संस्करण के अंतर्गत चेन्नई के चार विद्यालयों के साथ डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, वेलचरी, चेन्नई ने अपना सक्रिय योगदान दिया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वेलचेरी चेन्नई के '81 ग्रीन वारियर्स' के तहत भेजे गए कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों द्वारा 'मरीन क्लीन ड्राइव' में अपना श्रमदान दिया। इस अभियान का उद्देश्य था–छात्रों में पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति नवीन चेतना का संसार करना। इस अभियान को छात्रों ने पूर्ण उत्साह से संपन्न किया। इस अभियान से छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता देखने को मिली। छात्रों ने समुद्र तट से एकत्रित की गई सीपियों, शंखों को अपने मित्रों, शिक्षकों एवं प्रधानाचार्या जी को दिखाकर आनंद की अनुभूति की।

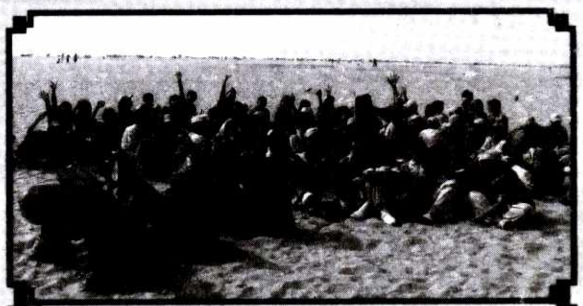

☞ पृष्ठ 9 का शेष

# गुरु विरजानंद का संक्षिप्त...

के समय 400 रु० तथा एक दोशाला भेंट किया।

दण्डी जी भरतपुर से **मथुरा** होते हुए **मुरसान** पहुँचे। कुछ दिन मुरसान रहकर फिर सोरों **विश्रान्त** आ गए।

**सोरों में दूसरी बार आगमन–** दण्डी जी सोरों आकर अपने पुराने स्थान **विश्रान्त घाट** पर रहने लगे। अंगदराम सहित कई छात्र उन से पढ़ने लगे। प्रतिदिन कोई न कोई श्रद्धालु दर्शनार्थ आता और श्रद्धापूर्वक भेंट दे जाता। इस प्रकार व्यवस्था ठीक चलने लगी और सब प्रकार का सुख था।

**सामाजिक स्थिति से दु:खी एवं रुग्ण–** दण्डी जी को सोरों में पढ़ाते हुए अनेक वर्ष बीत गए। सामाजिक वातावरण दिन–प्रतिदिन दूषित हो रहा था। सर्वत्र दम्भ, पाखण्ड का विस्तार, विद्या के नाम पर अविद्या का प्रचार, धर्म के नाम पर अधर्म का अनुष्ठान, सर्वत्र अन्याय, अनीति अंधकार एवं अराजकता देखकर दण्डी जी बहुत दु:खी हुए तथा घोर चिन्ता से रूग्ण हो गए। तीन दिन तक अचेत पड़े रहे। चौथे दिन कुछ सुधार हुआ तो दण्डी जी ने पढ़ाना शुरु कर दिया परिणाम स्वरूप फिर बेहोश हो गए। 11वें, 12वें दिन कुछ होश आया परन्तु ठीक होने की कोई आशा नहीं थी। अब दण्डी जी ने **अपना सर्वस्व** शिष्यों मे बाँट दिया और धीमे स्वर में कहा, ''इस शरीर को गंगा की धारा में प्रवाहित कर देना। इतना कहकर मौन हो गए।

**मरणासन्न दण्डी जी को गाड़ी द्वार भिजवा दिया–** दण्डी जी को मूर्च्छित एवं मरणासन्न जानकर एक शिष्य ने किराए की गाड़ी लेकर उन्हें गाड़ी में लिटाया तथा उसके ऊपर एक चादर डाल दी तथा गाड़ीवान से कहा, ''इन्हें गंगाधारा पर ले जाओ। यदि प्राण बच जाएँ तो गंगा के तट पर उतार देना यदि मर जाएँ तो बहा देना।''

गाड़ीवान प्रातः 9 बजे धारा पर पहुँच गया परन्तु उसे ज्ञात नहीं हो सका कि इन के प्राण अभी चल रहे हैं या नहीं। अतः दण्डी जी को किनारे पर लिटा दिया ओर वहीं छोड़ कर चला गया। दण्डी जी सारा दिन बेसुध वहीं पड़े रहे सायंकाल के समय **महन्त मथुरा दास वैरागी** ने उन्हें देखते ही पहचान लिया कि यह बेहोश साधु तो विरजानंद दण्डी हैं। शरीर में अभी प्राण बचे थे। रात भर शिष्यों के साथ उनकी बड़ी सेवा की। दण्डी जी को होश आया और वे उठकर बैठ गए। मथुरा दास जी ने तीन–चार दिन निरन्तर सेवा की। कुछ स्वास्थ्य लाभ होने पर दण्डी जी पुनः **विश्रान्त** स्थान चले गए।

दण्डी जी को जीवित देखकर सभी हैरान थे। वे तो उन्हें परलोकवासी मान चुके थे। इस कारण पीछे से उनकी सारी पुस्तकें, वस्त्र, भोजनादि का सामान उड़ा लिया था। दण्डी जी यह सब देखकर बड़े दु:खी हुए और यहाँ से **मथुरा** जाने का निश्चय कर लिया।

**सच्चे ईश्वर विश्वासी–** दण्डी जी एक परिचित को साथ लेकर किराए की गाड़ी से **मथुरा** को चल दिए। प्रस्थान तो कर दिया परन्तु पैसा–धेला पास नहीं था। गाड़ी का किराया तो मथुरा जा कर दे दिया जाएगा – परन्तु तीन–चार दिन यात्रा के समय भोजन व्यवस्था और बैलों के लिए चारे की व्यवस्था कैसे होगी? चलो, ईश्वर ही सहायक होगा।

संयोग देखिए, थोड़ी दूर चलने पर मार्ग में **सेठ दिल सुखराम** मिल गए जो सोरों की ओर जा रहे थे। वे दण्डी जी के बड़े भक्त थे। उन्होंने दण्डी जी को प्रणाम किया और **5 अशर्फियाँ** चरणों में भेंट की। दण्डी जी ने एक अशर्फी वापिस देकर–इस के बदले रूपए माँगे सेठ जी ने अशर्फी तो वापिस नहीं ली परन्तु 8 रू० जो जेब में पड़े थे भेंट कर दिए। इन रुपयों से तीन–चार दिन यात्रा सुखद हो गई। मथुरा पहुँचकर गाड़ी को लौटा दिया और सेवक को अपने पास रख लिया।

**क्रमशः**

1088, सैक्टर–4
गुड़गाँव (हरियाणा)

**********

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 06-07 /11/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

# आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सहारनपुर के तत्वावधान में एक पाँच दिवसीय निःशुल्क आवासीय आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सोनिया विहार के प्रांगण में जगाया गया। शिविर में वीरांगनाओं ने लाठी चलाना, नियुद्धम (कराटे), सर्वांग सुन्दर व्याम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, एवं आसन प्राणायाम का संगीत पर अभ्यास सीखा। शिविर के समापन समारोह में विश्व कल्याण की कामना करते हुए यज्ञ किया गया। समस्त वीरांगनाओं ने यज्ञ में प्रतिज्ञा पूर्वक कि हम हमेशा सत्य, धर्म, न्याय, सच्चाई, अच्छाई और सदाचार के रास्ते चलते रहेंगे।

समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. ओ.पी. वर्मा रीडर जैन कॉलेज, तथा मुख्य अतिथि डॉ. पूर्ण चन्द शास्त्री संस्कृत विभागाध्यक्ष जैन कॉलेज रहे। आर्य वीरांगनाओं ने शिविर में आत्म रक्षा हेतु प्राप्त प्रशिक्षण लाठी चलाना नियुद्धम (कराटे), का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सभी दर्शकों को आश्चर्य चकित कर दिया। मुख्य अतिथि डॉ. पूर्ण चन्द जी ने वर्तमान समय की परिस्थितियों को देखते हुए इस प्रकार के बालिकाओं के शिविर का आयोजन करने हेतु प्रधानाचार्या को साधुवाद और बधाई दी। विद्यालय की प्रधानाचार्या शिविर की शिविराध्यक्षा सुश्री मीनू भट्टाचार्या ने वीरांगनाओं को उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि आज बेटियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। उन्हें अच्छे संस्कार देकर शिक्षित करना बहुत आवश्यक है।

# डी.ए.वी. भिखीविण्ड (तरनतारन) में स्वामी विरजानन्द को श्रद्धाञ्जलि दी गई

आर्य समाज की महान् विभूति 'स्वामी विरजानन्द' जी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पण करते हुए गुरु नानक देव डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भिखीविंड में एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने 'विरजानन्द' जी की याद में सुन्दर गीत गाकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। अध्यापिका श्री मती वन्दना रामपाल एवं ममत्ता शर्मा ने स्वामी जी के जीवन से संबंधित अपने विचार व्यक्त किये और बच्चों को प्रेरित किया कि कैसे नेत्रहीन और माता पिता विहीन होते हुए भी उन्होंने कठोर तप एवं लगन से शिक्षा प्राप्त की और बाद में शिक्षा प्रदान करने का कार्य करने लगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उनसे शिक्षा प्राप्त की और जीवन का पाठ पढ़ा और गुरु दक्षिणा के रूप में आर्य धर्म के प्रचार में सर्वस्व अर्पित करने की प्रतिज्ञा की। 'स्वामी महर्षि दयानंद सरस्वती' के रूप में आर्य समाज को एक स्वामी विरजानन्द जी ने अनमोल रत्न दिया।

स्कूल के प्राचार्य श्री संजीव कोचर ने इस अवसर पर स्वामी विरजानन्द, महर्षि दयानन्द और महात्मा हंसराज जी के जीवन और शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी, और कहा कि हमें इन महान् आत्माओं के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए, और उनके पदचिन्हों पर चलना चाहिए। इसी में देश और समाज की उन्नति है।

# डी.ए.वी. जामुल में हुआ शपथ ग्रहण समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ए.सी.सी. जामुल में परितोषिक वितरण एवं छात्र–केबिनेट के सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह ए.सी.सी. क्लब में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कैप्टन श्री एस. शुक्ला (जनरल मैनेजर,एच.आर.एण्ड.ए. विभाग) ए.सी.सी. जामुल थे।

मुख्य अतिथि एवं अन्य गणमान्य अतिथियों के स्वागत तथा दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह का आरंभ हुआ। साथ ही इस अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को भी श्रद्धांजलि दी गई।

कक्षा नवमीं से बारहवीं तक के प्रथम स्थान प्राप्त छात्र–छात्राओं एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि द्वारा मेडल एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किये गए। विद्यालय के छात्र कैबिनेट के सदस्यों को माननीय मुख्य अतिथि द्वारा सैश एवं बैज प्रदान किया गया एवं उन्हें पूरी निष्ठा के साथ पद की जिम्मेदारी निभाने हेतु शपथ दिलाई गई। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि महोदय ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए बच्चों को ईमानदारी से अपना दायित्व निभाने की आदत विकसित करने की सलाह दी।

प्राचार्या श्रीमती मनीषा अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ द्वारा किया गया।

# डी.ए.वी. कोटा में 'कवि सम्मेलन' का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में बच्चों का कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें बच्चों ने वीररस, देश भक्ति और विभिन्न समसामयिक समस्याओं पर कविताओं का पाठ किया। इस कविता सम्मेलन के निर्णायक थे–प्रसिद्ध साहित्यकार–श्री विश्वामित्रा दाधीच, डॉ. प्रम जैन तथा आर्य समाज, कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा।

इस अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कनिष्ठ वर्ग में प्रथम आदित्य सिंह, द्वितीय आज्ञा गुप्ता, तृतीय कृति विजेता घोषित की गई। वरिष्ठ वर्ग मे –तृषा महेश्वरी प्रथम, रिद्धिमा सिंह द्वितीय, श्रंगारिका तृतीय स्थान पर रहीं। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि श्री विश्वामित्रा दाधीच ने अपनी कविता से सभी को मंत्र–मुग्ध कर दिया। श्री अर्जुनदेव चढ्छा ने इस अवसर पर बच्चों में संस्कारों को विकसित करने की बात कही।

कार्यक्रम के अंत में सभी को धन्यवाद देते हुए विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों में सृजनशीलता, भाषा को विकसित कर उनमें आत्मविश्वास का संचार करते है।

मुद्रक व प्रकाशक – श्री प्रबोध महाजन, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी